THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182004
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 B86 D　　Accession No. G.H 3186

Author　क्रोकर, गुलाबदास और मेहता, धनसुखलाल

Title　धूमरेखा　1950

This book should be returned on or before the date last marked below.

धूमरेखा

■ ■ ■

एकांकी

■ ■ ■

लेखक

श्री गुलाबदास ब्रोकर

श्री धनसुखलाल महेता

अनुवादक

श्री गौरीशंकर जोशी

"भारत सरकार की ओर मे भेंट"

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

हिन्दीनगर, वर्धा.

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिन्दीनगर, वर्धा

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण–२०००
अक्टूबर, १९६०
मूल्य––अेक रुपया पचीस नये पैसे

Checked 1969

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर, वर्धा

प्रकाशकका निवेदन

हिन्दीके पाठकोंके समक्ष अिस नाटकको अुपस्थित करते हुअे हमें प्रसन्नता हो रही है। अेक वर्ष पहले ही यह नाटक पाठकोंके हाथोंमें पहुँच जाना चाहिअे था, परन्तु अनेक कारणोंसे वह प्रकाशित आज ही हो रहा है, अिसके लिअे नाटकके लेखकोंसे तथा हिन्दीके पाठकोंसे हम क्षमा माँगते हैं। हम आशा करते हैं कि जिस प्रकार गुजरातीमें अिस नाटकका सत्कार हुआ है, अुसी प्रकार हिन्दी जगतमें भी अिसका सत्कार होगा। नाटक अभिनय-योग्य है अिसलिअे लेखककी सम्मति प्राप्तकर स्थान-स्थानपर अिसके खेलनेका प्रबन्ध किया जाअे। हिन्दी अनुवाद भी अच्छा ही बन पड़ा है, अिसलिअे अनुवादकको भी धन्यवाद देना हम यहाँ न भूलेंगे। नाटकके लेखकने अिस नाटकको प्रकाशित करनेकी अनुमति देकर हमें आभारी किया है, अुसके लिअे हम अुनको भी धन्यवाद देते हैं।

—प्रकाशक

* * * *

समितिकी 'साहित्य-निर्माण-योजना'

राष्ट्रभाषा-प्रचारके लिअे अुपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने तथा ज्ञान-वर्धक, अुच्च कोटिके ग्रन्थोंके निर्माण करनेके अुद्देश्यसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने वर्षों पहले 'साहित्य निर्माण योजना' बनाअी थी।

हम स्वीकार करते हैं कि अिस योजनाके अनुसार जितना कार्य अब तक होना चाहिअे था, अनेक कठिनाअियोंके कारण वह हो नहीं सका है; फिर भी समिति निम्नलिखित पुस्तकें प्रस्तुत कर चुकी है। हमें प्रसन्नता है कि अिन सभी पुस्तकोंका जनताने स्वागत और सत्कार किया है।

प्रकाशित पुस्तकें :—संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश, फ्रेंच स्वयं-शिक्षक, भारतीय वाङमय भाग १, २, ३, मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण, सोरठ तेरा बहता पानी (गुजराती अुपन्यास), धरतीकी ओर (कन्नड़ अुपन्यास), लोकमान्य तिलक (जीवनी-ग्रन्थ), तेलुगुकी अुत्कृष्ट कहानियाँ, मिर्ज़ा ग़ालिब : जीवनी और साहित्य अेवं धूमरेखा।

भारतके विभिन्न प्रदेशोंके निवासी देवनागरी लिपिके माध्यमसे भारत-की प्रादेशिक भाषाअें आसानीसे सीख सकें, अिस अुद्देश्यसे समितिने 'भारत-भारती' मालाका प्रकाशन आरम्भ किया है। अिस मालाके अन्तर्गत अबतक नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :—

'**भारत भारती**'—तमिल, तेलुगु, कन्नड़, अुड़िया, गुजराती और मराठी।

शेष भाषाओंकी पुस्तकें भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

रजत जयन्तीके अवसरपर 'रजत जयन्ती ग्रन्थ' के अलावा 'कविश्री माला' के अन्तर्गत २५ विभिन्न भाषा-भाषी कवियोंकी रचनाओंको मूल भाषा तथा हिन्दी अनुवादके साथ प्रकाशित करनेका विचार भी किया गया है।

आशा है, राष्ट्रभाषा-प्रेमी समितिकी अिस व्यापक योजनासे लाभ अुठाअेंगे।

* * * *

भूमिका

मानव-मनमें कैसी-कैसी कमजोरियाँ छिपी रहती हैं और वे किस समय और कैसे प्रकट होती हैं--यह अेक सनातन रहस्य है। अपने मनको समझना मानवके लिअे बड़ा कठिन है। अिसीलिअे अपने मनको परखना सबसे बड़ी साधना मानी गअी है। प्रधानत: अिसी विषयको लेकर सात दृश्योंमें 'धूमरेखा' की रचना हुअी है। अिस रहस्यमय गूढ़ विषयको मंचपर तादृश्य करनेमें लेखकको पूरी सफलता मिली है, क्योंकि नाटक बहुत अच्छा अभिनय-योग्य बना है। अिसका प्रयोग मंचपर भी सफल हुआ है, जो अिसकी बहुत बड़ी सिद्धि है।

नाटककी कथावस्तु मनन करने योग्य है और विचार-प्रेरक भी है। अिसका मूल्यांकन विभिन्न दृष्टिकोणोसे किया जाय, अिसमें सन्देह नहीं। मूल गुजराती पुस्तकके साथ गुजरातीके समर्थ आलोचक श्री मनसुखलाल झवेरीका दृष्टिकोण अुनके दिअे गअे "परिचय" के पढनेपर स्पष्ट हो जाअेगा। नाटकका मुख्य पात्र--नायक--कमलनयन अपनी युवावस्थामें अेक क्रान्तिकारी युवक है। जगतकी क्रान्तियोंका अध्ययनकर अुसका भावनाशील हृदय भारतमें भी वैसी ही--अहिंसक नहीं वरन् हिंसक क्रान्ति लानेके विचारमें तल्लीन रहता है। वह अेक क्रान्तिकारी दलका नायक रहता है और अपने साथियोंको बार-बार अपने क्रान्तिपूर्ण विचारोंसे अुत्तेजित भी करता रहता है। परन्तु जब प्राणोंकी आहुति देनेका प्रसंग आया, तब अैन मौकेपर अुसके मनने अुसको धोखा दिया; कायर मनने अुसे आगे बढ़नेसे रोका। यहाँतक कि अुसकी चचेरी बहन--कुटुम्बमें यही अकेली बहन थी और क्रांतिके क्षेत्रमें कमलनयनकी ही वह शिष्या थी--प्रतिभा मौका आनेपर अपने प्राणोंका अुत्सर्ग कर कार्य करनेको अुत्सुक होती है तो यह देखते हुअे भी अुसका कदर्य मन अुसे आगे बढ़ने नहीं देता। यह कदर्यता अुसके मनमें कहाँ और कैसे छिपी थी--यह वह स्वयं भी समझ नहीं पाया, और जीवनके अन्ततक वह अुसे समझ पाया या नहीं, अिसमें भी सन्देह है। नाटकमें प्रतिभाका काम

बहुत थोड़ा है। वह गौण पात्र है, परन्तु नाटककारने अुससे जो काम लिया है, वह बहुत बड़ा है। अुससे नाटकमें जान पड़ गअी है, क्योंकि अुसके द्वारा कमलनयनके मनकी कमजोरी—कदंयता ज्यों-की-त्यों दिखाअी जा सकी है। कमलनयन प्रतिभाको कभी भुला नहीं सका, क्योंकि जब अुस प्रसंगका अुसे स्मरण होता है, प्रतिभा अुसके सामने आ ही जाती है। अिस सूक्ष्म मानसिक व्यापारको भी नाटककारने पकड़ा है और अुसके प्रति अिशाराकर पाठक तथा प्रेक्षकका ध्यान अुसकी ओर आकर्षित किया है—यह नाटककी अेक मूल्यवान सामग्री है।

कमलनयन क्रान्तिका मार्ग छोड़कर संसारी बन जाता है और धन कमाने लगता है। अिस कार्यमें अुसे अच्छी सफलता मिलती है। धीरे-धीरे अुसकी गिनती धनियोंमें होने लगती है। अितना होनेपर भी अपने हृदयकी कमजोरीके कारण अैन मौकेपर अुसके द्वारा दिखाअी गअी कायरताके प्रसंगको वह भुला सका है? नहीं, अुसके हृदयके साथ यह प्रसंग अैसा जुड़ा हुआ है कि वह अुसे सदा कचोटता रहा होगा। शास्त्रोंमें कहा गया है कि पिताका पुत्र त्राता होता है; पिताके अधूरे कामोंको पूरा कर वह अुसे नरककी यन्त्रणासे बचा लेता है। वह अपने पुत्रमें अपने क्रान्तिके विचार भरकर अुसे क्रान्तिके लिअे तैयार करता है। समय आनेपर पुत्र फाँसीके मंचपर चढ़ जाता है। पितासे जो न हो सका, अुसे पुत्र मातृभूमिके लिअे आत्म-बलिदानकर अनन्त कीर्तिका भागी बनता है। यह बात नहीं है कि पुत्रके मनमें दुर्बल क्षण आते ही नहीं है। जब-जब अैसी दुर्बलता अुसके मनमें प्रकट होती है, तब-तब अुसे पिताका बल मिलता है। यह भी नाटकमें बड़ी सूक्ष्मतासे दिखाया गया है। पुत्रके अिस बलिदानके सम्बन्धमें यह कहना क्या अुचित न होगा कि वह पिता-पुत्रकी संयुक्त साधना थी? परन्तु नाटककार यह माननेको तैयार नहीं। किसी अेक विरोधी जनसे यह कहलवाकर कि "मर्द था, तो खुद क्यों नहीं गया? अपने बदलेमें बेचारे लड़केको (फाँसीपर) चढ़ा मारा। अब स्वयं अुसका यश लेना चाहता है।" कमलनयनके मनमें अुन्होंने मंथन जगाया है। यह मनोमंथन नाटकका बहुत बड़ा अुपकारी अंग है। नाटककारने अवश्य यह बात अेक विरोधीके द्वारा कहलाअी है, पर क्या यह अुसके अपने अन्तरकी ही प्रतिध्वनि नहीं है?

मनुष्यके हृदयमें जो अन्तर्द्वन्द्व चलता रहता है, अुसकी यही तो विशेषता है कि औचित्यमें जो विरोध होता है, वह बाहरके किसी छोटे-मोटे वाक्य या कथनसे अूपर अुभर आता है। और यह भी कौन कह सकता है कि यह मनोमन्थन कमलनयनका अपने पुत्रके प्रति अत्यधिक प्रेमके कारण नहीं था। वह अपनी कमजोरीका स्वयं अनुभव करता है और अपनेपर अुसे खीझ होती है कि वह खुद क्यों न गया, पुत्रको क्यों भेजा? वह सम्भवतः यह भी अनुभव करता है कि पुत्रकी कीर्तिमें, यशमें अुसे भी भागीदार समझा जा रहा है। पर वह तो अिस यशका हकदार नहीं, वह तो दुर्बल है, कायर है। हमारे विचारसे अुसकी मानसिक पीड़ाको समझना ही अिस नाटकको समझना है।

परन्तु यह कहना कि पुत्रको मातृभूमिके लिअे आत्मबलि देनेके लिअे तैयार करना तथा अुसके दुर्बल क्षणोंके समय अुसे बल देनेमें कमलनयनके मनमें कोअी अुदात्त भावना नहीं थी, केवल कीर्ति-लालसा ही थी, सही बात न होगी। देशभक्तिकी भावनासे प्रेरित होकर ही अुसने अपने पुत्रका चरित्र-गठन किया और वह भी समयपर अुसकी तरह दुर्बलता न दिखाअे, यही अुदात्त भावना अुसके मनमें अुस समय काम कर रही थी—अिसमें सन्देह नही। खुद कायर होनेपर भी कोअी अपने पुत्रको कायर देखना नहीं चाहेगा। हाँ, अपने पुत्र-प्रेमके कारण, पुत्रको अपने पास रखने और अुसकी माताको दुख न हो, अिस कारण वह ढीला-दुर्बल बनकर अपने पुत्रको रोक सकता था, परन्तु कमलनयनने यह नहीं किया और जीवनभरके मनोमन्थनकी पीड़ा स्वीकार कर ली—यह अुसका भी अेक बड़ा त्याग था; कम-से-कम हमारा तो यही मानना है। और कौन कह सकता है कि अुत्तरवयमें जीवनके मोहसे अधिक पुत्रका मोह नहीं होता। अैसे कअी दृष्टान्त मिलेंगे, जिनमें पुत्रके कारण माता-पिताने जीवन अुत्सर्ग कर दिया है। नाटककी कथा-वस्तु गम्भीर मनोवैज्ञानिक तत्वोंपर आधारित है और सरल भाववाही संवादों द्वारा अुसे स्वाभाविकताके साथ प्रत्यक्ष किया गया है। जैसा कि अूपर कहा गया है, नाटक सफल है, अभिनेय है, प्रेरणादायी है, अुसके संवाद हृदयपर असर करनेवाले हैं। हमारा विश्वास है कि हिन्दी-भाषी जगत अिसका अवश्य स्वागत करेगा।

हिन्दीनगर, वर्धा **—मोहनलाल भट्ट**

परिचय

[मूल गुजरातीमें दिया गया यह परिचय हिन्दी पाठकोंके लिअे विशेष अुपयोगी होगा ।]

श्री गुलाबदास ब्रोकरकी कहानी "धूम्रसेर" का नाटकके रूपमे यह नवावतरण है। नाटक तथा कहानी—दोनोंको लोकादर तथा शिष्ट-सम्मान प्राप्त हो चुका है। अपने कला-गुणके कारण वे अिस प्रकारके आदर तथा सम्मानके योग्य ही है।

"धूम्रसेर"की कथावस्तु राजकीय भूमिकापर आधारित है। १९०७–८ के बग-भंग राष्ट्रीय आन्दोलनके कमलनयन मुकर्जी अेक अग्रगण्य कार्यकर्ता है। परन्तु जब प्रसंग आकर अुपस्थित होता है तब लड़ाअीमें सीधा योग देनेकी अुसकी हिम्मत नहीं होती है। १९२९–३० की लड़ाअीमें अुसका अेकमात्र पुत्र विपिन हिंसक तथा आतंकवादी प्रवृत्तिमें योग देनेके लिअे अुससे अनुमति मांगता है। कुछ हिचकिचाहट दिखाकर वह अुसे अनुमति देता है। विपिन लड़ाअीमें योग देता है। पकड़ा जाता है और अुसे फाँसी होती है। कुछ समयके बाद विपिनकी बहादुरीके कारण नहीं, अपने अेक-मात्र पुत्रको लड़ाअीमें योग देनेकी अनुमति देनेके कारण कुछ लोग कमलनयन-की वीरताकी प्रशंसा करते है। अुस समय "देखी अुसकी वीरता! मर्द था, तो खुद लड़ाअीमें क्यों नही गया, व्यर्थ लड़केको चढ़ा मारा" कहकर कोअी अुसका विरोध करता है। कमलनयनके कानोंमें ये शब्द पड़ते है और अुसकी आँखें खुल जाती है। अुसके अपने अन्तरमें जो बात गूढ़ या अगूढ़ रूपमें खलबली मचा रही थी, वह अुसके समक्ष स्पष्ट प्रकट हो जाती है। अब अुसका विषाद-योग आरम्भ होता है। अुसके मनसे यह बात दूर नहीं होती कि अुसने स्वयं ही अपने पुत्रका खून किया है। अिस नाटककी अितनी ही कथावस्तु है। यद्यपि अिस कथावस्तुकी भूमिका राजकीय है, फिर भी यह सच है कि लेखकका अुद्देश्य किसी राजकीय विचारधाराका पुरस्कार करना या प्रचार करना नहीं है। लेखकका यह भी अुद्देश्य नहीं है कि वह यह

बताअे कि अपने देशके मुक्ति-संग्राममें कैसे-कैसे बत्तीश लक्षणोंवाले नरवीरों का बलिदान दिया गया है। और न वह यही दिखाना चाहता है कि जो गअे अुनकी बात तो ठीक, पर कुछ पीछे रहनेवाले अुनके स्वजनोंको पद-पदपर कैसी असाधारण तथा असहाय यातनाअे भोगकर किस प्रकारका अनन्त करुण जीवन-पथ काटना पड़ रहा है। लेखकका अुद्देश्य तो मानव-मनकी गूढ़ता तथा अगमता दिखाना है। वह तो यह कहना चाहता है कि अिस मानव-मनको तो देखो। यह कैसी परस्पर विरोधिनी वृत्तियोंका अधिष्ठान है? अेक ओर आदर्श-परायणता, स्वाभिमान, कर्तव्य आदिको भुला देनेवाला भय दिखाअी देता है, तो दूसरी ओर अपनी प्रिय-से-प्रिय वस्तुका बलिदान देनेकी वीरता भी अुसमें दिखाअी देती है। हम तो केवल मनुष्यके व्यवहारको ही देख सकते हैं। अुस व्यवहारके प्रेरक तत्वोंका समग्र व्यापार हमारे लिअे, खुद व्यवहार करनेवाले मनुष्यके लिअे भी--गूढ़ और अगम्य बना रहता है। यही कारण है कि हम मनुष्यके मूल्यांकनमें कभी-कभी भूल कर बैठते हैं। कहीं-कही तो भयके कारण मनुष्य बड़े-बड़े पराक्रम कर दिखाता है और कभी-कभी मनुष्य की बड़ी-से-बड़ी अुदारताके मूलमें अति अनुदार बनियापन भी दिखाअी पड़ता है। अितना ही नही, कअी बार यह भी देखा गया है कि मनुष्य-प्रवृत्तियोंके मूलमें अेक ही वृत्तिका प्रेरक तत्व नहीं होता, वरन् अनेक वृत्तियाँ अेक साथ मिलकर गूढ़ातिगूढ़ प्रकारसे कार्य करती पाअीं जाती हैं।

कमलनयनका ही दृष्टान्त लें। विपिनको लड़ाअीमें जानेकी अनुज्ञा वह देता है, परन्तु अिस अनुज्ञा देनेके अुसके कार्यके मूलमें अुसके मनकी कौन-सी बात सचमुच कार्य कर रही है, यह कौन जान सकेगा? अुसके अपने मनमें तो निश्चयपूर्वक यह ग्रन्थि बँध गअी है कि अुसने केवल अपनी अिज्जत जमाने और बढ़ानेके लिअे ही अपने अेकमात्र युवा तथा अपनी आकांक्षाओंकी पूर्तिके अेकमात्र सम्बल--पुत्रको मौतके हवाले कर दिया। कमलनयन चतुर अेवं व्यवहारकुशल है। मनुष्य स्वभावकी तथा स्वयं अपनी की हुअी अुसकी परीक्षा गहरी और सच्ची है—अिसमें सन्देह नही। फिर भी स्वभावसे वह कायर है, यह भूलना नहीं चाहिअे। कायर होनेपर भी वीरकीर्ति प्राप्त करनेका अुसका लोभ कुछ कम नहीं है। अिसलिअे जो

कीर्ति वह अपने पराक्रमसे न प्राप्त कर सका, अुसे वह यदि अपने पुत्रको लड़ाअीमें भेजकर प्राप्त करना चाहे, तो अुसमें आश्चर्यकी कोअी बात नहीं है। स्वभावतया लोग यह मानेंगे कि अपने अेकमात्र पुत्रको, जवान पुत्रको, युद्धमें जानेकी अनुमति देनेवाले पिताका कलेजा, वज्रका कलेजा होना चाहिअे। अुसकी वीरता भी किसी प्रकार कम नहीं होगी। अितना ही न कि विपिनको लड़ाअीमें जानेकी अनुज्ञा देनेमें कमलनयनके हृदयका कीर्तिलोभ ही कारण नही हो सकता। परन्तु यह कीर्तिलोभ ही कारण है और दूसरा कारण कुछ हो ही नही सकता—यह निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। विपिनको अनुमति देनेमें कमलनयनकी अैसी क्षुद्र स्वार्थ-परायणता भी कारण हो सकती है अथवा अपने स्वप्न, साहस, आशा तथा प्रवृत्तियोंकी परिपूर्ति अपने सन्तान द्वारा करनेकी मानव सहज—अच्छी या बुरी, परन्तु निसर्गदत्त तथा सर्वसाधारण वृत्ति भी हो सकती है। अथवा अपने अेकमात्र लाड़ले पुत्रमें बाल्यकालसे ही वह जिन संस्कारोंका अभिसिंचन कर रहा था, अुनके परिपक्व होनेका समय आनेपर अुसे निराश न करनेकी और अुसके आगे घुटने टेक देनेकी पिता-सुलभ निर्बलता भी हो सकती है। अथवा वर्षोंतक बड़ी-बड़ी बातें बनानेके बाद समय आनेपर पैर तोड़कर बैठ जानेसे पुत्रकी नजरमें नीचे गिर जानेका सम्भवतः भय भी कारण हो सकता है। अथवा यह भी हो सकता है कि ये सभी वृत्तियाँ कम-अधिक परिमाणमें अेक साथ मिलकर भी कार्य कर रही हों। निस्सन्देह कमलनयन तो अपनी कीर्तिलिप्साको ही दोष दे रहा है, परन्तु वह तो वयके साथ-साथ बढ़नेवाली आन्तरिक रिक्तताके अनुभवसे अुत्पन्न अेकांगी तथा [illegible] आत्म-निर्भत्सना भी हो सकती है। सच तो यह है कि समुद्रके गहरे-से-गहरे तलकी तो थाह ली जा सकती है, परन्तु मानव-मनके व्यापारोंकी थाह नहीं ली जा सकती।

यही बात लेखक दिखाना चाहता है और जिसके लिअे अुसने राज-द्वारी प्रवृत्तिकी भूमिका स्वीकार की है। यही रहस्य कोअी दूसरा लेखक, यदि वह कुशल लेखक है—तो शिकार, शिखर, ध्रुवप्रदेश, विमान आदिके पराक्रमोंका निरूपणकर दूसरे किसी प्रकारकी कथावस्तु द्वारा भी दिखा सकता है।

जीवनका यह रहस्य दिखानेके लिअे लेखकने अिस नाटकको सात दृश्योंमें बाँट दिया है। नाटकका नायक कमलनयन बंगाली है और बंगालीको नायक बनानेमें अेक प्रकारका औचित्य भी है। १९०७–८ में बंगालका विभाजन हुआ, अुसके कारण सारे भारतमें, विशेषतः बंगालमें खलबली मच गअी। बंगालियोंके स्वभावकी विशेषताओंके सम्बन्धमें, जैसा कि हरेक प्रान्तके तथा देशके सम्बन्धमें होता है—जो मान्यताअें सामान्यतया प्रचलित हैं, अुनको ध्यानमें रखते हुअे—बंग-भंगसे आरम्भ होनेवाले राजकीय आन्दोलनकी भूमिकाका नायक बंगाली हो—यही अधिक अुचित प्रतीत होता है। कमलनयनके पुत्र—विपिनको गाँधीजीका अहिंसक असहयोगका कार्यक्रम जँचता नहीं है और वह हिंसक आतंकवादी प्रवृत्तियोंकी ओर आकर्षित होता है, अिसका कारण भी अिससे स्पष्ट हो जाता है।

कमलनयन बंगाली है—यह अुचित ही है। परन्तु अुसके स्वभावकी सूक्ष्म मीमांसा करनेपर साधारणतया जिन्हें बंगालियोंके स्वभावकी मूलगत विशेषताअें कहा जाता है, वे आवेश, अुर्मिलता तथा अुद्रेक आदि गुण तो कम, किन्तु गुजरातियों जैसी भीरुता, छानबीनकर गिनतीपूर्वक काम करनेके गुण ही अुसमें अधिक पाअे जाते हैं। अुसके प्रत्येक कथन और विशेषतः अुसके कार्यकलाप, अभिनय आदिके संबंधमें लेखकने जो सूचनाअें दी हैं, अुन्हें जाँचकर देखनेसे यह बात स्पष्ट हो जाअेगी। वह छोटी-सी प्रतिभा मौका मिलनेपर, बिना किसी पशोपेशके लड़ाअीमें कूद पड़ती है, पर अुसका (कमलनयन) का जवान पुत्र विपिन अैन मौकेपर क्षणभरके लिअे भी जो दुर्बलता दिखाता है, वह कमलनयनसे अुसे मिली स्वाभाविक विरासत ही है। कमलनयनकी कीर्ति-लिप्साकी कोअी सीमा नहीं है। परन्तु वीरताकी कीर्ति प्राप्त करनेके लिअे जो साहस तथा शौर्य चाहिअे, वह अुसमें पर्याप्त परिमाणमें नहीं है। यह बात नहीं है कि अुसे देशभक्तिका रंग नहीं लगा हो। अिस रंगसे अुसने अपने पुत्रको ठीक मौकेपर रंगा भी है, परन्तु न मालूम क्यों वह अैन मौकेके वक्तपर अिधर-अुधर करने लगता है। कमलनयनकी अिस लाक्षणिकताके कारण अुसे बंगाली न माननेकी अपेक्षा यही स्वीकार कर लेना अधिक अुपयुक्त होगा कि वह अमुक प्रान्तकी ही विशेषता नहीं है।

नीलिमा तो पैरसे चोटी तक माता ही है। विपिन बड़ा हो गया है। अब अुसका लाड़-प्यार करना संभव नहीं, अिसलिअे वह विपिनके बालकोंका लाड़-प्यार करनेको आतुर है और विपिनके मर जानेपर कमलनयनपर अपने वात्सल्यका अभिषेक करती है। विपिनकी मृत्युके बाद जब वह शोकमग्न हो जाती है, तब कमलनयन अुसे धैर्य दिलाता है। परन्तु बादमें जब कमलनयन शोकमग्न हो जाता है, तब अुसे धैर्य दिलानेका काम नीलिमा-को करना पड़ता है और अिस प्रकार देखनेपर वात्सल्य, धैर्य तथा शौर्यकी वास्तविक मूर्ति नीलिमा प्रतीत होती है।

तृतीय दृश्यमें कमलनयन तथा नीलिमाके बीचमें जो बातचीत होती है, अुसमें कुछ चापलूसी तथा बालकी खाल निकालने जैसी बात दिखाअी देती है, फिर भी अुनके दाम्पत्यका—केवल सहधर्मचारका ही नहीं, परन्तु प्रेमभावमूलक मैत्रीमेंसे पैदा हुअी परस्पर सहायवृत्तिका, चित्रण भी लेखककी कुशलताका सुन्दर दृष्टान्त है।

अिस मनोहर कृतिका गुजरातने अुचित ही सत्कार किया है।

—मनसुखलाल झवेरी

* * * *

धूमरेखा

■ ■ ■

अे कां की

■ ■ ■

श्री गुलाबदास ब्रोकर
श्री धनसुखलाल महेता

■ ■

पात्र :

पुरुष—

१. बाबू कमलनयन मुकर्जी
२. विपिन मुकर्जी
३. प्रबोध
४. प्रमथेश
५. अनिल
६. शरद्
७. विधुशेखर
८. नौकर
९. अंग्रेज जेलर

स्त्री—

१०. नीलिमादेवी
११. प्रतिभा
१२. लावण्या
१३. वन्दना

धूमरेखा

पहला दृश्य

स्थान—बाबू कमलनयन मुकर्जीके घरका दीवानखाना

समय—सन १९३९-४० का सन्ध्याकाल

[दीवानखानेमें सजावटके लिअे फर्नीचर करीनेसे रखा है। अेक कोनेमें पुराना पियानो रखा है। दूसरी ओर नअे ढंगका सोफासेट है। नीचेकी बत्तीके निकट सिर्फ अेक जीर्ण-शीर्ण आराम-कुर्सी रखी है, बाकी सब नया है। बत्तीके सामने अेक बड़ा दरवाजा है। दरवाजा बरामदेमें खुलता है, जहाँ कटघरा बना है। कटघरा मार्गकी ओर होनेसे अुधरसे आने-जानेवाले लोगोंका कमरसे अूपरका भाग घरवाले देख सकते हैं।

मुकर्जी बाबूकी अुम्र लगभग पचपनके आसपास होगी। फिर भी वस्त्र अुन्होंने सलीकेसे पहन रखे हैं। अिस्त्री की हुअी धोती, पंजाबी ढंगका सुन्दर कुरता और हाथमें कन्धेपर डालनेकी ढाकेकी मलमलकी चादर।

परदा अुठता है तब वे कटघरेके समीप खड़े कुछ दूरतक मार्गपर दृष्टि गड़ाअे दिखाअी देते हैं। शहनाअी, ढोल, तासे आदिकी अस्फुट-धीमी आवाज सुनाअी देती है। वे तुरन्त दीवानखानेमें आकर जरा अूंचे स्वरसे कहते हैं :]

नीलिमा, चलो, चलना है न! समय हो चुका।

[चारों ओर निगाह दौड़ाते हैं। नीलिमादेवी कटघरेके पास खड़ी होकर मार्गकी ओर देख रही हैं। बाजोंकी आवाज बढ़ती जा रही है।]

[नीलिमादेवी भी बुढ़ापेके निकट तक पहुँची हुअी अेक भद्र महिला हैं। अुनके परिधान किअे हुअे वस्त्रोंमें सुघराअी है। बारातमें सम्मिलित होनेकी दृष्टिसे किया गया अुनका वस्त्र-अलंकार-परिधान अुम्रको शोभा देने योग्य कलामय ढंगसे हुआ है।]

नीलिमादेवी :–(मार्गकी ओर आँखें गड़ाअे) चलिअे।

कमलनयन :–(दो-अेक क्षण रुककर) : चलो नीलिमा, ये बाजे आदि सुनाअी देने लगे ! चलें न !

नीलिमादेवी :–(वहीं खड़े-खड़े) : हाँ, अब चलना चाहिअे।

कमलनयन :–(हँसते हुअे) : चलनेको तो कहती हो, मगर अपनी जगहसे तिलभर भी नहीं सरक रही हो ! (थोड़ा आगे बढ़कर) आखिर अिस प्रकार आँखें गड़ाकर क्या देख रही हो ?

नीलिमादेवी :–(चौंककर पीछे मुड़ते हुअे) : कुछ तो नहीं। (हाथ पकड़कर) चलो, अब चलेंगे।

(मुकर्जी महाशय नीलिमादेवीके शोक-भरे चेहरेको देखने लगते हैं। वे रास्तेपर नजर डालते हैं। नीलिमादेवी अन्दर चली जाती है।

धीरे-धीरे दूल्हेकी बारात अुधरसे गुजरती है। मुकर्जी बाबू कटघरेके निकट खड़े-खड़े अुसी ओर देखते रहते हैं। आगे-आगे ढोल, तासे और बाजेवाले। बादमें दूल्हा आहिस्ते-आहिस्ते कदम बढ़ाता आता है। वह तेजस्वी नौजवान है। अुसके हाथमें नारियल है। वह कमलबाबू और नीलिमादेवीकी ओर देखकर, नमस्कार करता है। जो फिरसे वहाँ पहुँच गअी है। स्त्रियाँ अुल्लासके स्वरमें विवाहके गीत गा रही हैं। वरयात्रा आगे बढ़ जाती है। धीरे-धीरे बाजोंकी आवाज भी क्षीण होती जाती है। मगर कमलबाबू अुसी ओर ताकते जहाँ-के-तहाँ खड़े रहते हैं।)

नीलिमादेवी :–(पास जाकर कन्धेपर हाथ रखते हुअे) : चलिअे, वर्ना हमें देर हो जाअेगी।

(दोनों अन्दर आते हैं। कमलनयन विचारमग्न दीखते हैं। अुनकी ओर टकटकी लगाअे हुअे नीलिमादेवी अपने विषादपूर्ण चेहरेपर मुसकुराहट लानेका निष्फल प्रयत्न करती हैं।)

कमलनयन :—(अेक क्षणके लिअे नीलिमादेवीकी ओर देखकर) : चलो। (फिर आराम-कुर्सीपर अिस मुद्रामें बैठते हुअे मानो सहसा कोअी खयाल आया हो) अेक चुरुट दोगी ? जरा पी लूं, फिर चलें।

नीलिमादेवी :—देखिअे, कहीं देर न हो जाअे। नहीं तो अुन्हें बुरा लगेगा। हमारा अुनसे अितना घरोपा है जो !

कमलनयन :—(फीकी हँसी हँसते हुअे) : नही, अिसमे बुरा लगनेकी क्या बात है ? चुरुट पीनेमें देर ही कितनी लगेगी ? और अिसपर भी अगर देर हो ही गअी, तो हम सीधे कन्या-पक्षवालोंके यहाँ पहुँच जाअेंगे।

नीलिमादेवी :—अच्छा। लीजिअे, यह लाअी सिगार।

(अन्दर जाती है। कमलनयन गूढ़ विचारमें डूबते-अुतराते बैठे हैं। फिर अेकाअेक अुनका हाथ अूपर अुठ जाता है और वे कुर्सीपर सीधे तनकर बैठ जाते हैं—गोया किसी चीजको अपने निकट खींचना चाहते हों।)

कमलनयन :—(दर्दभरे स्वरमें) : विपिन, विपिनदा, बेटा......

नीलिमादेवी :—(अुन्हें थामते हुअे गद्‌गद कंठसे): यह क्या कर रहे हैं ? (जरा स्वस्थ होकर) क्या चलना नही है ? दो-दो वार तो बुलावा आ गया !

कमलनयन :—(धीमे स्वरसे): चलते हैं। जरा थोड़ी देर चुरुट पी लूं।

(चुरुट सुलगाते हैं। नीलिमादेवी भी अुनके पास ही कुर्सीपर बैठ जाती हैं। कमलनयन अुनकी ओरसे दृष्टि फेर लेते हैं। नीलिमादेवी साड़ीके पल्लेसे अपनी आँखोंमे आअे आँसू पोंछती हैं। कमलनयनके चुरुटका धुआँ गोलाकार होकर अूपर अुठ रहा है।)

कमलनयन :—(धुअेकी ओर देखते हुअे) : अिस धुअेके गुब्बारोंमे मेरे जीवनके कितने ही दृश्य दिखाअी दे रहे हैं !

(धीरे-धीरे स्टेजपर अँधेरा छा जाता है। कुछ पल अिसी प्रकार बीतते हैं। फिर परदा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

स्थान—वही।

समय—१९०७–८ की अेक सन्ध्या।

(बैठकके कमरेमें अेक गोल टेबलके आसपास पाँच-छह कुर्सियाँ रखी हैं। अेक कोनेमें पियानो और दूसरे कोनेमे आधुनिक ढंगका सोफा सेट। लगभग बाअीस वर्षकी अुम्रके तरुण कमलनयन अकेले ही दीवानखानेमे चक्कर लगा रहे है। अुन्होंने पंजाबी ढंगका चौड़ी आस्तीनवाला रेशमी कुरता पहन रखा है और बंगाली ढंगकी धोती। अुनके बालकी जुलफें चेहरेपर आकर्षक ढंगसे फहरा रही हैं। किसीका अिन्तजार कर रहे हों और किसी गम्भीर विचारमें तल्लीन हों अिस प्रकार वे कभी दरवाजेसे बाहर झाँककर देखते हैं तो कभी कमरेमें चक्कर काटने लगते हैं। हाथमें पुस्तक पकड़े है जिसपर बीच-बीचमें वे अेकाध नजर डाल लेते हैं।)

कमलनयन :–(निराशासे अूबकर) : अभीतक नहीं आअे ? (हाथपर बँधी घड़ीकी ओर देखकर) अिस प्रकार क्या खाक क्रान्ति होगी ?

(सिर धुनते हैं। अिसी बीच दरवाजेपर दस्तक दी जाती है। वे तुरन्त दरवाजेपर पहुँचकर चार-पाँच आगन्तुक मित्रोंको लेकर अन्दर आते हैं। अुनमें अेक युवती भी है। सब अठारह-बीस वर्षके बीचके नौजवान है।)

कमलनयन :–(कुर्सियोंकी ओर संकेत करके): बैठिअे, आप सब बैठिअे। मैं तो आप लोगोंका अिन्तजार करते-करते थक गया।

प्रतिभा:–(क्षमा-याचनाके स्वरमें) : बहुत देर हो गअी, नहीं दादा !

कमलनयन :–(जरा गुस्सेसे): अरे तू दादावाली तो चुप बैठ! बड़ी जल्दी मचा रही थी और खुद ही लेट हो गअी (सबकी ओर मुखातिब होकर) यदि हम वक्तके पाबन्द नहीं रहे तो क्या खाक कोअी बड़ा काम कर सकेंगे ?

प्रबोध :–(बचाव करते हुअे) : मगर बात यह थी......

कमलनयन :–(अधिकार वाणीसे) : सुनिअे, अगर हमें दरअसल कुछ करना है तो नियमितता और समयका पालन किअे बिना काम नहीं चलेगा और हमारे कार्योंके लिअे तो यह अनिवार्य शर्त है। अिसमें किसी प्रकारकी गलती या ढील-ढाल हरगिज नहीं चल सकती।

(सबकी निगाहें धरतीपर झुक जाती है। किसीके मुँहसे अेक शब्द भी नहीं निकलता। कमलनयन थोड़ा मुसकुराता है। बादमें स्नेहपूर्वक :)

खैर, यह तो (प्रतिभाकी ओर देखकर) अेक बड़े होनेके नाते कहा। (दूसरोंकी ओर मुड़कर) हमारी केन्द्रीय समितिने आप लोगोंके मार्गदर्शनके लिअे मुझे नियुक्त किया है, अिसलिअे यह कहना पड़ा। अच्छा, अब यह बताओ कि देर क्यों हुअी ? हमारी पिछली चर्चाके बाद आपके मनमें क्या-क्या सवाल पैदा हुअे ?

प्रबोध } :–(अेक साथ):– कमल दादा आज .....
प्रतिभा } दादा, हम ....

कमलनयन :–(हँसकर) : यों अेक साथ तुम दोनोंकी बातें कैसे सुन सकूँगा ? (प्रतिभाकी ओर अिशारा करके) बोल, पहले तेरी पारी।

प्रतिभा :–(शरमाकर) : नहीं, प्रबोध ही बात करेंगे।

प्रबोध :–हम सब अपनी पिछली चर्चाके विषयमें ही विचार करने आअे हैं। पहले मेरे घर हम सब अिकट्ठे हुअे। वहाँ हमारी बातचीत चल रही थी अुसी दरमियान अचानक क्षितीश आ धमका। हमने तुरन्त विषय बदल डाला और सामान्य राजनीतिकी चर्चा करने लगे। क्षितीश

स्वयं भी अुसमें शामिल हुआ। बंग-भंगके कारण वह भी अुत्तेजित तो था ही। हमने अुसके विचार जाननेकी कोशिश की। मगर वह तो नरम दलका निकला। अुसने हम मबसे आज शामको छह बजे होनेवाली नरम दलके कांग्रेसियोंकी सभामें चलनेका बहुत अनुरोध किया।

प्रमथेश :–(बीचमें) : कहने लगा कि आप लोग जरा देखिअे तो कैसा कार्यक्रम ये लोग अपने सामने रखते हैं।

प्रबोध :–(बातको आगे बढ़ाते हुअे) : हमारे यहाँ आनेमें देर होनेकी पूरी-पूरी मम्भावना थी। और आखिर ये लोग हमें और क्या समझा सकते थे ? अत: मैंने माफ अिनकार कर दिया, मगर क्षितीश नहीं माना। वह चाहता था कि हम सुरेन्द्रनाथ बनर्जीकी सिंह-गर्जना सुनें और अिसलिअे वह हमें अुस सभामें खींच ही ले गया।

प्रतिभा :–(जोशमें खड़ी हो जाती है) और दादा, अुस सभामें रवि बाबू भी बोलनेवाले थे।

कमलनयन :–(सुना-अनसुना करके) वह खींच ले गया और तुम सब चले गअे, यही न ?

प्रमथेश :–यह बात नही, कमलदा ! अुसके अत्यधिक आग्रह करनेके कारण ही हम वहाँ गअे थे और हमने यह शर्त की थी कि पौने सातको हम वहाँसे हर हालतमें चल देंगे। लेकिन सुरेन्द्रनाथ और रवीन्द्रनाथकी वाग्धाराने हमें हिलने भी न दिया। सात बजे तक हम वहाँसे अुठ ही न सके।

कमलनयन :–क्या कहते थे वे लोग ?

प्रबोध :–स्वदेशी, स्वदेशी। बस, स्वदेशीका ही मन्त्र दे रहे थे। कहते थे कि अगर भारतवर्ष और खास करके बंगभूमि यदि स्वदेशीका मन्त्र अपना ले, वाणी, आचार और विचार तमाम बातोंमें सम्पूर्ण स्वदेशी बन जाअे, तो फिर किसी भी विदेशी साम्राज्यकी यह ताकत नहीं कि वह अिस देशपर अपना राज चला सके। और न भारत-माताकी देहके टुकड़े करनेकी ही फिर किसीकी हिम्मत होगी।

प्रमथेश :—अुनके भाषणोंका मुख्य सार था स्वदेशीका आग्रह और अुसका देशव्यापी आन्दोलन !

कमलनयन :—देशव्यापी आन्दोलनका क्या मतलब है ?

प्रमथेश :—गाँव-गाँव, शहर-शहर और गली-गलीमें भाषणोंकी धूम मचाकर बेखबर लोगोंको जगाया जाअे।

कमलनयन :—(सबपर अेक तीव्र दृष्टि फेकते हुअे खड़े होकर): अच्छा, तो आप लोगोंको यह बात कैसी लगी ?

(कुछ क्षणोंके लिअे सब चुप हो जाते है। नजर चुराकर अेक दूसरेकी ओर देखते हैं। कमलनयन अेक-अेक करके हरेककी ओर देखते हैं। अन्तमें प्रबोध कुछ सकपकाते हुअे बोलता है :)——

कमल दादा, क्या अैसा सम्भव है ? आखिर तो ये अंग्रेज बनिअे हैं। स्वदेशी आन्दोलनसे अिनके व्यापारको जबरदस्त धक्का पहुँच सकता है और हमारे देशव्यापी आन्दोलनसे स्वदेशीके प्रचारको बल भी मिल सकता है। (आतुरतासे) क्या अैसा नही हो सकता ?

कमलनयन :—सब कुछ हो सकता है। दुनियामे क्या नही हो सकता ? किन्तु क्या यह सम्भव है ? लेक्चरबाजी और स्वदेशीके प्रचारसे क्या अंग्रेज पराजित होनेवाला है ? अुसे अिन सब बातोंमे कोअी आपत्ति नही। वह यह भाषा समझता ही कहाँ है ? बस वह तो अेक ही भाषा जानता है (खड़े होकर जोरसे टेबलपर हाथ ठोंककर)——खूनकी, तोप-तलवार और बन्दूककी—— भाषामें हम अुसे कभी ललकार न सके——मुकाबला न कर सकें, अिसीलिअे तो अुसने हमे नि:शस्त्र कर दिया है। अुसने कुछ अैसे-वैसे ही नही, खून बहाकर हुकूमत हासिल की है। और बिना खून बहाअे वह राज्य छोड़कर कभी जानेवाला नहीं है। अिस काममे सुरेन्द्रनाथ जैसे व्याख्यान-वीर या रवीन्द्रनाथ जैसे महाकवि महाशय बहुत काम आनेवाले नहीं है। अिसमे तो (सारी मंडलीकी ओर संकेत करके) आप जैसे दुध-मुँहे और नौजवान युवक-युवतियाँ चाहिअे—— (अुत्साहसे) जिनके दिलोंमें साहस और भुजदंडोंमे शक्ति हो, अदम्य अुबलता हुआ अुत्साह जिन्हें अेक पलके लिअे भी शान्त नही बैठने देता और जिनका

रोम-रोम सुजला-सुफला बंगभूमिके टुकड़े करनेवाले जालिमोंकी बोटी-बोटी अुड़ानेको तड़प रहा है।

(सुननेवाले मन्त्रमुग्धकी भाँति अेक-अेक करके खड़े होते हैं और अुनकी ओर टकटकी लगाकर देखते हैं। कमलनयन मानो अपनेसे ही बात करते हों बोलते रहते हैं।)—

शास्त्रोंमें भी कहा गया है कि आततािअीको देखते ही अुसका काम तमाम कर दो। वह न तो किसी दूसरे तरीकेसे समझनेवाला है और न हमारे पास अुसे समझानेकी दूसरी रीति ही है। हालाँकि अुसने हमारे हाथोंसे हथियार छीन लिअे हैं, मगर दिलमे जोश तो है न? हिम्मत तो कहीं गअी नही! अेकाध पिस्तौल, जैसा-तैसा बनाया हुआ देशी बम, छुरी, तलवार जो भी हाथ लगेगा अुसे लेकर हमारे हाथमें पड़नेवाले अंग्रेजोंको खतम करेंगे। अिस भूमिका वातावरण हम अैसा गरमागरम और जोश-खरोशवाला बना देंगे कि अुसके लिअे यहाँ अेक क्षणके लिअे भी टिकना मुश्किल ही नही बल्कि असम्भव हो जाअे। अेक-अेकके पीछे सौ-सौको बलिदान देना पड़े, तब भी हम पीछे नही हटेंगे। हमारे पास युवकोंकी संख्या क्या कम है?

और द्विसप्त कोटि कर धारण करनेवाली हमारी माता अिस आततायीके खिलाफ अम्बिकाका नहीं बल्कि प्रचंड कालीका रूप धारण करेगी। अिस कालीके नेतृत्वमें युद्धमें जानेवाले युवक-युवतियोंके अेक हाथमें अपना सिर होगा और दूसरेमें हथियार। अुनके हृदयोंमें दुर्गाकी दशप्रहरणधारिणी मूर्ति होगी और कंठसे वन्दे मातरम्‌के गगनचुम्बी स्वर फूट रहे होंगे।

सब लोग (अेक साथ): वन्दे मातरम्......

(दो-अेक क्षण कमलनयन चुप रहता है, सबकी ओर देखता है। हरेकके चेहरेपर अुत्साहकी चमक और अंगोंमें फड़कन है।);

कमलनयन:—(शान्त होकर धीमे स्वरमें): यह तो मैं बड़ी लम्बी तकरीर कर गया। आप लोगोंको बोलनेका कोअी मौका ही नहीं दिया। आपको क्या लगता है?

प्रबोध		सर्वस्व दान करना है।
प्रमथेश		मारकर मरना है।
प्रतिभा	—(अेक साथ)	माँका खप्पर भरना है।
अनिल		माँके टुकड़े करनेवालोंके टुकड़े करना हैं।
शरद्		आततताओका सर्वनाश करना है।

कमलनयन :—(अुत्साहमें) : शाबाश ! मैंने भी यही अुम्मीद रखी थी। लेकिन (चेतावनीके स्वरमें) अुसके खतरों और यातनाओंको भी जानते हो न ? अिस पथके पथिकके सिरपर भले ही प्रशंसाके पुष्प चढ़ाअे जाते हों, भले ही अुसे अक्षय कीर्ति भी प्राप्त होती हो, मगर अुसका सर्वप्रथम और श्रेष्ठ पुरस्कार तो है कठोर कारावास और फाँसीका फन्दा और अिससे डरकर पीछे हटनेवालेके लिअे है जिन्दगीभर बदनामी।

सब :—हमें पता है। हम कभी पीछे नहीं हटेंगे।

प्रतिभा :—(अचानक आगे बढ़ कर) : माँ दुर्गाका खप्पर हम अपने ताजे खूनसे भरेंगे। माँ कालीकी जय !

सब :—जय हो, माँ कालीकी जय हो !

प्रतिभा :—(गाती है) :

त्वं हि दुर्गा दश प्रहरणधारिणी
कमला कमलदल-विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्
सुजलाम् सुफलाम् मातरम्
वन्दे मातरम् !

(सब गीतमें साथ देते हैं।)

कमलनयन :—(गीत बन्द होनेपर) : भारत माताको जब अैसे पुत्र-पुत्रियाँ मिलेंगे, तभी अुसका अद्धार होगा, अुसे विजय मिलेगी। (फिर समझाते हुअे) फिर भी सुनो, यह जल्दबाजीमें निर्णय करनेका काम नहीं।

अिसमें जीवन और मरणका सवाल है। अभी भी आप सब शान्तिसे अिस बातपर विचार कर सकते है, और खूब गहराअीसे विचार करके ही अन्तिम फैसला करें। जब आप अपना अन्तिम और अटल निर्णय कर लेंगे, तभी किसे कौन-सा काम करना है, अिस बारेमें हम विचार करेंगे। (घड़ीमें देखकर) ओह! आठ तो बज ही रहे हैं। बस, अब सब लोग आ ही रहे होंगे। अिसी समय यहाँ अेक सभा होने जा रही है।

('हमारा निर्णय अटल ही है, कमल दा, अब और नया क्या सोचना है?' आदि वाक्य कहते और कमलनयनको नमस्कार करते हुअे अेक-अेक करके सब चले जाते है। केवल प्रतिभा रुक जाती है।)

प्रतिभा :–(कमलनयनका हाथ पकड़कर) दादा, मुझे अब और कोअी निर्णय नहीं करना है। मैंने तो बिलकुल तय कर लिया है। मगर अेक बिनती है।

कमलनयन :–(हँसकर) : क्या ?

प्रतिभा :–आपको मानना ही होगा, दादा! अिनकार न करना। आपने मुझे अबतक सगी बहन जैसा माना है। और (प्रेमसे) क्यों न मानेंगे? हमारे दो परिवारोंके बीच लड़का और लड़कीके नामसे केवल हम ही तो दो जने है। तब भला आप मुझे चचेरी बहन कैसे मान सकते है? और आपने अबतक मेरी कोअी भी माँग कभी अस्वीकार नहीं की। तब यह माँग, (हंसकर) भूल गअी, बिनती मानेंगे न?

कमलनयन :–(सोचमें पड़ जाता है) : अैसी क्या बात है, प्रतिभा ?

प्रतिभा :–कहूँ? देखिअे, मानना ही पड़ेगा। मैं बिना वचन लिअे छोड़नेवाली नही हूँ।

कमलनयन :–(परेशान होकर) : पर बात क्या है आखिर? कुछ साफ-साफ तो कहो। यों पहेलियाँ क्यों बुझाती हो?

प्रतिभा :–पहेलियाँ क्यों बुझाने लगी? नेताजन क्या कभी पहेलियोंको समझते हैं? लीजिअे कहती हूँ। अब आपको अधिक तंग नहीं करूँगी। जब आप कामका बँटवारा करें, तब मुझे सबसे पहले मौका देना। (आवेशमें कमलनयनका हाथ पकड़कर) कहिअे, देंगे न, दादा ?

कमलनयनः–(साश्चर्य और आदरपूर्वक देखकर अुसके सिरपर आशीर्वादका हाथ रखते हुअे) : सौ बरस जियो मेरी बहन। तुम क्यों पहले जाओगी ? पहले जानेवाले तो बहुत पड़े हैं ! (मजाकमें) क्या तुम्हें जीना अच्छा नहीं लगता ?

प्रतिभाः–जीना तो भला किसे अच्छा नहीं लगता ? मगर जीना हो तो बहादुरकी भाँति, नहीं तो जीनेका क्या अर्थ ? आपने ही तो कहा है न कि––

जीते हो तो कुछ कीजिअे जिन्दोंकी तरह;
मुर्दोंकी तरह जिअे तो क्या खाक जिअे ?

कमलनयनः–हूँ।

प्रतिभाः–तो मेरी बात कबूल है न ?

कमलनयनः–देखूँगा।

प्रतिभाः–नहीं, देखूँगा नहीं चलेगा। आप वचन दीजिअे।

कमलनयनः–पागल तो नहीं हुअी ? वक्त आनेपर देखा जाअेगा।

प्रतिभाः–(मुँह अुदास हो जाता है। दीन भावसे चिरौरी करते हुअे) : छोटी बहनकी अितनी-सी बात भी नही मानेंगे, दादा ?

(बाहर दरवाजेपर दस्तक पड़ती है।)

कमलनयनः–(शीघ्रतासे) सुनो प्रतिभा, यहाँ अभी अेक जरूरी सभा होने जा रही है। मालूम होता है वे लोग आ गअे हैं। तो अब हम फिर मिलेंगे।

प्रतिभा:–(आजिजी करते हुअे) मेरी कही हुअी बात याद रखना, दादा !

(फिर दरवाजेपर खट-खट आवाज होती है। कमलनयन आगे बढ़ता है। प्रतिभा चुपकेसे चली जाती है। किरीट और विधुशेखरको साथ लेकर कमलनयन आता है। दोनों बीस-बाअीस वर्ष की अुम्रके नौजवान हैं।)

कमलनयन:–क्यों आप दो ही कैसे आओ ? और सब कहाँ गओ ?

किरीट:–गजब हो गया, नयन ! हमारी पार्टीके पाँच-सात आदमियोंको हिरासतमें ले लिया गया है।

कमलनयन :–(हड़बड़ाकर) अं, क्या कहते हो ? किस प्रकार ?

विधुशेखर:–हमने अपने निश्चयके मुताबिक अुन तीनोंको अन्तिम हिदायतें देनेके लिअे कन्दर्पके यहाँ बुलाया था। अुपेन, बारिन वगैरह भी वहाँ आअे हुअे थे। कौन जाने, हममेंसे ही कोअी फूटा होगा। घरका भेदी लंका ढाअे। अन्यथा पुलिसको अुसका कैसे पता चलता? किरीट, गिरीश और मै वहीं जा रहे थे कि अितनेमें कन्दर्पकी खिड़कीसे हमारा बँधा हुआ खतरेका अिशारा पातेही हम वहाँसे अुलटे पैरों लौट पड़े। बादमे पता चला कि तमाम लोगोंको हिरासतमें ले लिया गया।

किरीट:–ज्यों-त्यों आजिजी-खुशामद करके गिरीशको तो आखिर हमने छिपा दिया है। हमारे कामके लिअे अुसका बाहर रहना बहुत ही जरूरी है। वह है, तो सब कुछ है। बाकी वह तो कह रहा था कि कलका काम करनेवाले तीनों पकड़े गओ तो हर्ज नहीं, आखिर हम तीन तो है न ? चलो हम ही अुसे पूरा कर डालें। लेकिन बड़ी मुश्किलसे हम अुसे समझा सके। कहा, तुम बेफिकर रहो, कलका वार हम खाली नही जाने देगे। तीसरा साथी हम खुद खोज लेगे।

विधुशेखर:–गिरीशको भगा देना तो ठीक हुआ न, नयन ?

कमलनयन :–(विचारकी मुद्रामें) जो कुछ हुआ बहुत बुरा हुआ। अगर हममेसे ही कोअी भेदी निकला हो तो वह सब गुड़ गोबर कर देगा।

किरीट:–अब तो हो भी क्या सकता है, नयन ? यह खतरा तो हमें अुठाना ही होगा।

कमलनयन:–(सोचते हुअे) वह हम सबको गिरफ्तार करवा देगा।

विधुशेखर:–गिरफ्तार करवाअेगा तो भी ज्यादासे ज्यादा वह अेक ही दलको पकड़ा सकेगा न ! गिरीशके सिवा दूसरे दलोंके बारेमें और कौन जानता हैं ? और अिसी खयालसे तो हमने गिरीशको भगा दिया हैं।

किरीटः–अब अिस विषयकी चर्चा बन्द करके हम लोग अगर कलकी योजनाके बारेमें सोचें, तो ठीक होगा। क्या कहते हो, नयन ?

कमलनयनः–किस बारेमें ?

किरीटः–हमारे पूर्व निश्चयके मुताबिक कल तो हमें किसी भी प्रकार हमला करना ही होगा। आअी. जी. पी. की गाड़ी निकलते ही बँधा अिशारा हो और अेकका वार खाली जाते ही दूसरा तुरन्त वार करनेके लिअे मुस्तैद रहे। हमने गिरीशसे कहा कि हम दो तो हैं ही और तीसरा भी हर हालतमें खोज लेंगे।

कमलनयनः–(हँसकर) मगर यों अेक रातमें तुम तीसरा आदमी कहाँसे पा जाओगे ?

किरीटः–आप हमें क्या समझते हैं। आसमानसे भी ढूँढ़ लाअेंगे।

विधुशेखरः–या अपनी जेबसे ही निकाल लेंगे।

कमलनयनः–(हँसते हुअे) जादूगर मालूम होते हो। (अेकाअेक गम्भीर होकर) लेकिन यह वक्त हँसनेका नहीं है। केवल यह अेक रात मात्र बच रही है और अैसा विश्वासपात्र आदमी तुम्हें कहाँ मिलेगा ?

किरीटः–(मुस्कराते हुअे) अुसे ढूँढ़नेके लिअे हमें कहीं बहुत दूर थोड़े ही जाना है ?

कमलनयनः–क्यों, क्या अभी कोअी गिरफ्तार होनेसे बचा है ?

विधुशेखरः–हाँ, वह भी कोअी गिरीशसे कम नहीं है। अुसीके भरोसे तो हमने गिरीशको पूरा यकीन दिलाया है।

कमलनयनः–(अुमंगमें आकर) : तब तो हमारा पूरा दल अभी पुलिसके हाथ नहीं आया है। बोलो, कौन है वह ?

किरीट :–(गम्भीरताका दिखावा करके) : कमलनयन मुकर्जी !

विधुशेखर :–(हँसते-हँसते) : तुम स्वयं, नयन।

कमलनयन :–(दो कदम पीछे हटकर) : क्या मेरे बारेमें कह रहे हो ?

किरीट :–हाँ, तुम्हारे बारेमें ही कह रहे हैं, नयन। अिसमें अितने आश्चर्यकी क्या बात है? सारी योजना ही तुमने और गिरीशने मिलकर बनाअी है। पात्र, स्थान, समय सब कुछ तुम्हींने तय किया है। जबतक अनिवार्य न हो, हमें हर हालतमें गिरीशको तो सही सलामत रखना ही होगा। अब केवल तुम ही बाकी रहे हो। तुम्हारे सिवा और कहें भी किससे? हमारी ओरसे गिरीशको यह पूर्ण विश्वास दिलानेपर ही कि हम तुम्हें अवश्य अपने साथ लेंगे, वह अज्ञातवासमें रहनेको राजी हुआ।

विधुशेखर :–जो हो, कलका काम तो किसी भी तरह पूरा होना ही चाहिअे। दुश्मन खुश हो रहे होंगे कि सारी साजिशका पता चल गया! षड़यंत्रकारी पकड़ लिअे गअे! आज अखबार अिस विजय-गानसे गूँज रहे होंगे। कल अिससे कहीं अधिक बड़े धड़ाकेसे हमें अिस गूँजको बन्द कर देना चाहिअे। (आवेशमें आकर) दुश्मन भी देख ले कि बंग माताकी गोदमें अैसे अेक नहीं अनेक लाल पड़े हैं, जो अुन्हें कभी चैनसे नहीं जीने देंगे; अेक दिनके लिअे भी विजयका आनन्द नहीं मनाने देंगे। हमारी माँ न तो पुत्र-पुत्री-विहीन है और न पराक्रम-हीन है, जो अिस प्रकार विवश होकर रोने लगे और दुश्मनके विजयकी मूक तथा निराधार साक्षी बने।

कमलनयन :–(थोड़ा चिढ़कर) यह सब तो मैं भी जानता हूँ। आपको भाषण करनेकी जरूरत नहीं। लेकिन मैं यदि तुम्हारे साथ आया, तो मेरे सिपुर्द किअे हुअे कामका क्या होगा? मेरे मातहत काम करनेवाले आदमी लगभग तैयार हो गअे हैं। अिन सबका क्या होगा? सब किया-कराया मिट्टीमें नहीं मिल जाअेगा?

किरीट :–अिन सब बातोंकी तुम जरा भी चिन्ता न करो। गिरीश सब सँभाल लेगा। अब अिस प्रकार बातोंमें व्यर्थ समय गँवाना ठीक नहीं है। कल भोर होते-होते हम सबको तैयार हो जाना चाहिअे। अच्छा, तो अब हम चल दिअे। तुम तैयार रहना।

कमलनयन :–(हिचकते हुअे) : लेकिन अिसमें तीनोंकी क्या जरूरत है! तुम दो क्या कम हो?

किरीट :–यह सवाल तुम क्यों कर रहे हो, नयन ? अेक बार निश्चित हो जानेके बाद यह प्रश्न ही क्यों अुठता है ?

कमलनयन :–(खीझकर) : क्यों नही अुठ सकता ? हाथमें लिया हुआ काम अधूरा छोड़कर बस तुमने कहा अिसलिअे क्या मै चला चलूँ ? क्या यह कोअी हँसी-दिल्लगीकी बात है ?

किरीट :–क्या यह कमलनयन बोल रहा है ? हमने तो सोचा था कि तुम यह समाचार सुनते ही तुरन्त तैयार होकर हम सबके आगे हो जाओगे। क्या सैनिकको युद्धमे जानेके लिअे विचार करनेमे समय लगता है ? माताके आर्द्र स्वरमे पुकारनेपर क्या शिशुको तैयार होनेमे समय लगता है ?

कमलनयन :–(हँसकर अुड़ाते हुअे) : अिन सब बातोंकी मुझे खबर है, पर मुझपर भी कुछ जिम्मेदारियाँ हैं। अुन सबको यों पलभरमें मै फेंक नही सकता।

विधुशेखर :–तो क्या तुम्हारा यह खयाल है कि तुम्हारे जानेमे यह सब काम ठप्प हो जाअेगा ?

कमलनयन :–(कड़ुवाहटमे) : गिरीशके बिना यह ठप्प हो जाअेगा अैसा तो तुम मानते ही हो न ?

किरीट :–(गुस्सा होकर): तब तुम नहीं आओगे ?

कमलनयन :–(दृढ़तासे) : हाँ, कमसे कम अिस वक्त तो नही।

किरीट :–(स्वस्थतापूर्वक) : कोअी बात नही। अिसमें किसीपर जबरदस्ती तो है नही। मगर तुम्हे अेक बात कह देता हूं। अगर तुम आज नही आअे, तो फिर किसी भी दिन नहीं आ सकोगे, अिस जन्ममे कभी नही, अिसे लिख रखना।

विधुशेखर :–तुम्हारा सिर अपनी हथेलीपर नहीं, बल्कि धड़पर है। अिसमें दिमागी दलीलबाजी है, दिलका अुभड़ता हुआ अदम्य जोश नहीं। तुम मेजिनी और गेरीबाल्डी, रशियन और आयरिश क्रान्तिकारियोंके विचार और चरित्र भले ही सदा पढ़ते-सोचते रहोगे, अपनी अतुल्य बुद्धिशक्ति और वाक्चातुर्यके बलपर दूसरोंको क्रान्तिके लिअे अुकसा भी सकोगे, मगर अितना

निश्चित है कि तुम अपना सिर अपने हाथों कभी धड़से अलग करके माताके खप्परमें हरगिज नही डाल सकोगे ।

किरीट :–ठीक है, हम अपना कोअी और साथी ढूंढ़ लेंगे।

(सब लोग चलनेको अुद्यत होते हैं । कमलनयन सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहता है । अेकाअेक प्रतिभा अन्दर घुस आती है। जानेवाले रुक जाते हैं ।)

प्रतिभा :–(अुत्तेजित होकर) : सच दादा, क्या यह सब सच है ? बारिन, अुपेन, कीर्तिदा आदि सब पकड़ लिअे गअे हैं ?

कमलनयन :–(अूंचा सिर करके, फीकी हँसी हँसते हुअे) : हाँ, बहन !

प्रतिभा :–दादा, अब क्या होगा ?

किरीट :–होगा क्या ? अपना काम चलता रहेगा ।

प्रतिभा :–(कमलनयनका हाथ पकड़कर) : दादा, तो अब सबसे पहले मुझे ही यह सुअवसर देना ! मेरी बात कही आप भूल न जाना।

कमलनयन :–(मित्रोंकी ओर देखते हुअे, धीमी आवाजमें) : किरीट, शेखर! मेरी प्रतिभा बहुत देरसे माँग कर रही है, जल्दीसे जल्दी अपना बलिदान करनेको आतुर हो रही है। बढ़िया सैनिक है। क्या तुम्हारे काम आअेगी ?

किरीट :–बहन, तुम कलके आक्रमणमें शामिल हो सकोगी ? तैयारीके लिअे समय नही है ।

प्रतिभा :–मुझे और क्या तैयारी करनी है ? बस दादाके आशीर्वादकी ही देर है ।

(वह कमलनयनके पास जाकर चरण-रज लेती है। कमलनयन दूसरी ओर मुंह मोड़कर अुसके सिरपर हाथ रखकर आशीर्वाद देता है। किरीट और विधुशेखर देखते रहते हैं।)

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

समय :–१९२९–३० के आसपासकी सन्ध्या ।

स्थान :–बाबू कमलनयनका दीवानखाना ।

(दीवानखाना तो पुराना ही है मगर फर्नीचर आदिका रंगढंग बदल गया है । १९२९-३० के जमानेकी फैशनका फर्नीचर है । सोफासेट और कुर्सियाँ आधुनिक ढंगकी हैं । अेक कोनेमे फैशनेबल टेबलपर नया रेडियो रखा है, किन्तु दूसरे कोनेमे पड़ा हुआ पियानो तो अब भी वही पुराना है । फुट लाअिट्समे थोडी दूर सोफासेटके सामने पुरानी आराम कुर्सी रखी है । परदा अुठता है तब बाबू कमलनयन अुस आराम कुर्सीपर पडे हुअे चुरुट पीते दिखाअी देते हैं । अुनके हाथमें अेक नअी पुस्तक है, जिसे पढ़नेमे वे मशगूल हैं । अुम्र लगभग पैंतालीस, बाल काले और शरीर सुदृढ़ है ।

अुनके ठीक सामने सोफेके अेक छोरपर नीलिमादेवी बैठी हैं । अुनकी आयु चालीसके करीब होगी । व्यक्तित्व प्रभावशाली, कपड़े सादे मगर सलीकेसे पहने हुअे । जब परदा अुठता है तब वे कुछ कसीदेका काम करती हुअी दिखाअी देती हैं । दो-अेक मिनट यों ही शान्तिसे निकल जानेके बाद :)

नीलिमादेवी :–आपको वह ज्योतिर्मअी कैसी लगी ?

कमलनयन :–जैसे और मनुष्य हैं ।

नीलिमादेवी :–जरा ठीकसे बात कीजिअे न !

(हँसकर) मैंने यह कब कहा कि वह देव जैसी लगती है !

कमलनयन :–(पुस्तकमे ही आँखें गड़ाअे) : जैसा प्रश्न वैसा अुत्तर । कैसी लगीके क्या मानी ? मनुष्य और भला कैसा लगेगा ? मनुष्य जैसा ही न ?

नीलिमादेवी :–नहीं, यह बात नहीं । मै कह रही थी कि वह खूबसूरत है न ?

कमलनयन :–अैसी सुन्दर तो कलकत्तेमे लाखों छोकरियाँ होंगी। मगर अिसमे क्या ? (पुस्तक अेक ओर रखकर नीलिमादेवीके सामने दृष्टि गड़ाअे हंसते हुअे) अुसके सुन्दर-असुन्दर होनेमे तुम्हे क्या मतलब ? तुम्हे कहाँ अुससे शादी करनी है ?

नीलिमादेवी :–(कसीदा बन्द करके) भले ही मुझे न करनी हो, मगर हम करवा तो सकते है न ?

कमलनयन :–यह तो और भी बुरी बात है। शादी करनेवाला तो अेक ही जीवन बिगाड़ता है लेकिन करानेवाला अनेक।

नीलिमादेवी :–(मुसकराकर खडे होते हुअे) : क्या कह रहे हैं, लजाते भी नहो ! क्या आपने मेरा जीवन बिगाड़ा है ?

कमलनयन:–(कुर्सीमे सीधे बैठकर हंसते हुअे) : बड़ी मक्कार हो ? क्या मैंने ही तुमसे शादी की है, तुमने नहीं ?

नीलिमादेवी :–जी हाँ, आपने तो खुद शादी की है, जब कि मेरी की गअी है। चौदह-पन्द्रह वर्षकी लडकी भला शादी-वादीके बारेमे क्या समझ सकती है ? (निकट आकर) मगर सच कहिअे, यह ज्योतिर्मअी क्या आपको अच्छी नही लगती ?

कमलनयन :–(मजाकके लहजेमे): वह अच्छी लगती भी हो तो अिससे हमें क्या लेना-देना ! अुसके माँ-बापने अुसकी शादीका भार तुम्हारे सिरपर थोड़े ही डाला है ?

नीलिमादेवी :–(अेक कुर्सी खींचकर अुनकी बगलमे बैठते हुअे) : मेरे सिरपर कितना बोझ है अिसकी चिन्ता आपको कहाँ है ? आपको तो अपनी पुस्तक भली और चुरुट भला और भली है ये सनातन कालकी कुर्सियाँ !

कमलनयन :–(अुसकी ओर देखते हुअे) : और यह पुरानी पत्नी भी तो ?

नीलिमादेवी :–अगर वह भली होती तो आप अुसकी बात अिस प्रकार मजाकमे नही अुड़ाते ?

कमलनयन :–अितनी बड़ी सफेद झूठ क्यों बोल रही हो ? क्या मैं सुन नही रहा हूँ ? अिसीलिअे तो मैंने अपनी पुस्तक कबकी अेक ओर रख दी है ! नही तो अुसमें कितना मजा आ रहा था !

नीलिमादेवी :–(खड़े होकर, झूठमूठ रोषमे) : तो आप अपनी पुस्तक पढ़िअे। मुझे कुछ नही कहना है।

कमलनयन :–(तेजीसे अुठकर हाथ पकड़कर बैठाते हुअे) : अैसा भी कही होता है ? (अुत्साह दिखाते हुअे मजाकमें) हाँ, क्या कह रही थी तुम ! ज्योतिर्मअीके विषयमें ? कितनी सुन्दर है वह, यही न ? और होशियार भी कितनी है ! और अुसकी आवाज, क्या बात करनेका सलीका और क्या विनय-मर्यादा ! अिसके जैसी लड़की तो कलकत्तेमें. . . . .(हँस देता है।)

नीलिमादेवी :–(सचमुच गुस्सा होकर) : आपको दिल्लगी ही करनी हो तो मुझे बात नहीं करनी। (कमलनयन हँसता है) हँसो, खूब हँसो। मेरी भी क्या अक्ल मारी गअी जो अपना कसीदेका काम छोड़कर आपसे बात करने आअी !

(सोफेकी ओर चल देती है। कमलनयनको जरा जोरसे हँसी आ जाती है। नीलिमादेवी फिर कसीदा काढ़ना शुरू कर देती हैं। कमलनयन पास जाकर अुनके हाथमेसे अुसे छीन लेते हैं।)

कमलनयन :–अैसा भी कही होता है ? मैंने भला अिसमे क्या झूठ कहा ? (हँसते हुअे) ज्योतिर्मअी जैसी होशियार, चालाक, विनयशील, सुन्दर, तन्दुरुस्त और पढ़ी-गुणी . . . . . .

नीलिमादेवी :–(अुनके मुँहपर हाथ रखते हुअे) : बस-बस, अब मेहरबानी करके कुछ न कहें। मुझे कुछ नही सुनना (छीनते हुअे) लाअिअे, मेरा काम।

कमलनयन :–मगर बात क्या है आज, यह तो कहो? ज्योतिर्मओीपर आज अितना ज्यादा प्रेम क्यों अुमड़ पड़ा है, जो अुसकी तारीफ करते तुम्हारा जी ही नहीं भरता ? (फिर हँसता है।)

नीलिमादेवी :–(गुस्सेमें भी हँसते हुअे): मेरा जी नहीं भरता या आपका? मानो विशेषणोंका कोअी भंडार खोल दिया हो! (अुनकी ओर देखते हुअे) अब आखिरी बार पूछती हूँ। आपको सीधे मुँह बात करनी है या नहीं ?

कमलनयन :–करनी क्यों नही ? अन्यथा मै अपना पढ़ना छोड़कर यहाँ किसलिअे आता ?

नीलिमादेवी :–आपका पढ़ना जाअे भाडमें। अिसी कारण तो आप ठीकसे जवाब नहीं देते ! गोया मै आपको हैरान-परेशान कर रही हूँ अिसलिअे चलो किसी तरह यह बला टले। बादमे आरामसे पुस्तक ही पढ़ना है...... मगर पराअे लड़कोंके विवाहकी बात पढ़नेमें आपको आनन्द आता है और घरके लड़केकी बात की जाती है, तो मजाक सूझता है।

कमलनयन :–आज तो तुम मुझे कोअी नया ज्ञान सिखा रही हो, नीलिमा! ज्योतिर्मअी हमारे ही घरकी लड़की है, यह तो मै अितने बरसोंमें भी नही जान पाया था।

नीलिमादेवी :–हाँ, अैसी अुलटी-अुलटी ही बातें कीजिअे! जैसे कुछ समझते ही नही! माना कि ज्योतिर्मअी घरकी लड़की नहीं, मगर विपिन तो पराया लड़का नहीं है न ?

कमलनयन :–नही, हरगिज नही। पर वह तो ज्योतिर्मअी नही है? तुम तो ज्योतिर्मअीके बारेमें पूछ रही थी न ?

नीलिमादेवी :–अब बहुत सयानापन न दिखाअिअे। (गम्भीर होकर) मै तो विपिनके बारेमें ही पूछ रही थी। अुससे ज्योतिर्मअीकी सगाअी की जाअे तो!

कमलनयन :–अच्छा..... (अेकाध क्षण विचार करनेके बाद ठुड्डीपर अँगुली रखकर) हूँ....... (फिर पल भर बाद खड़े होकर) लेकिन वैसे देखा जाअे तो नन्दकिशोर बाबूकी सुचेता क्या बुरी है?

नीलिमादेवी :–(विचार करते हुअे) हाँ. . . . वह भी सुन्दर है। वह ज्योतिर्मअीसे भी बढ़कर सुन्दर है। और वह कहेमें भी रहनेवाली है। बाकी ज्योतिर्मअी तो अैसी तेज-तर्राट है कि किसीको हाथ ही न रखने देगी।

कमलनयन :–तब फिर ठीकसे पूरा विचार तो करती नही, और. . . (कुछ सोच रहे हैं अिस प्रकार) वैसे तो पल्लवी–वही दुर्गा माँकी विनोदी लड़की भी कुछ बुरी नही है, क्यों ?

नीलिमादेवी :–हाँ, वह भी ठीक है। ज्योतिर्मअीमे सुचेता लाख दर्जे अच्छी है। जाने क्यों मुझे अुसका ख्याल नहीं आया। पढ़ी-लिखी भी कुछ कम नहीं है। और क्या कहा आपने ? दूसरा नाम क्या बताया ?

कमलनयन :–दुर्गा माँकी पल्लवी।

नीलिमादेवी :–छी. . . . अुसमे क्या धरा है ? हाँ, वह अत्यन्त सुन्दर जरूर है। और अुसके जैसी सुन्दर लड़की सारे बंगालमें ढूँढ़े नहीं मिलेगी। मगर सिर्फ रूपको क्या करें ? है तो बिलकुल जड़ बुद्धि।

कमलनयन :–तब फिर पूर्णिमा ?

नीलिमा :–हाँ, वह भी अेक है। मुझे कहीं भी देखती है तो बड़े मीठे शब्दोंमें 'माँ' कहकर पुकारती है और जब वह हँसती है तब तो गालोंपर मानो खंजन अुठ आते हैं। पूर्णिमाका भी जरूर विचार किया जा सकता है।

कमलनयन :–और अिन्दु, विशाखा, अरुणा, विन्दुवासिनी, लावण्यप्रभा. . . . .

(बरबस हँस देता है)

नीलिमा :–(रोषमे खड़ी होकर) : तो आप मेरा मजाक अुड़ा रहे हैं। (गद्गद् कंठसे) कभी-कभार कोअी गम्भीर बात करने आओ, तब भी बस मजाक ही सूझता है।

कमलनयन :–यह बात नहीं। मै तो कह रहा था कि. . . . . .

नीलिमा :–(दुखी आवाजसे) आप भले कुछ भी कह रहे हों, मुझे अब आपकी कोओी बात नही सुननी।

कमलनयन :–यह भला कैसे हो सकता है ? शादी क्या कोओी छोटी-मोटी बात है ? हमे हरेक लड़कीके बारेमें पूरा विचार कर लेना चाहिअे।

नीलिमा :–सच पूछो तो आपको कोओी विचार ही नही करना है। फिर क्यों नाहक सिरपच्ची करते है ? लड़का भले ही कितना बड़ा हो जाअे, आपको अिसकी क्या चिन्ता ?

कमलनयन :–विपिन अैसा कहाँ बहुत बडा हो गया है जो अिस प्रकार सोच रही हो, पगली ?

नीलिमा :–आपके लिअे तो वह अभी दुधमुँहा बच्चा ही है। बीस बरसका तो होने आया।

कमलनयन :–केवल बीस ही न ?

नीलिमा :–क्यों आपकी निगाहमे बीसकी कोओी गिनती ही नही है ? मानो खुदने बहुत बडी अुम्रमे शादी की हो।

कमलनयन :–अब जमाना बहुत बदल गया है, नीली ! अब हम अगर अैसी बात करे तो भी क्या लड़के-लड़कियाँ हमारी सुननेवाले है ?

नीलिमा :–बीस बरस कोओी कम अुम्र नही कही जाअेगी।

कमलनयन :–सो तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन तुम्हारा विपिन मान जाअेगा ? मैं तो अुसे अभी खूब पढ़ाना चाहता हूँ। वह बड़ा नाम पैदा करेगा, हमारे परिवारकी अिज्जत बढाअेगा। तुम नही देख रही हो कि वह कितना होशियार है !

नीलिमा :–तो आप अपनी मर्जीमे आअे अुतना अुसे पढ़ाअिअे और अपनी मर्जीके मुताबिक अुसे नाम कमाने दीजिअे, मैं कहाँ अिनकार करती हूँ। पर मेरे मनसे जो अुसकी शादी हो जाअे तो मै भरपाओी। फिर दो सालमें अुसका बच्चा मेरे हाथमे खेलने लगेगा तो कमसे कम मेरा समय तो अच्छा कटने लगेगा !

कमलनयन :—वाह, बहुत खूब ! गोया तुम तो अब बूढ़ी हो गअी !

नीलिमा :—(मुँहपर काली छाया पड जाती है। दर्दभरी आवाजमें) : मैं बूढ़ी न हुअी तो क्या हुआ ? मेरे कितने बच्चे चल बसे ? (फिर अुत्साहमे) लेकिन मेरे लिअे मेरा विपिन बहुत है। मेरी गोदीमें अुसके बच्चोंको खिलाअूँ तो जीवन सार्थक हो जाअे।

कमलनयन :—(सद्‌भावपूर्वक अुमके कन्धेपर हाथ रखकर) : जितने होते है वे मभी जिन्दा थोड़े रहते हं, नीली ? और यों क्या सभी मरते हे। मगर खैर। (गम्भीर होकर) अब मैं भी गम्भीर बात पर ही आता हूं। मेरे मनमे भी विपिनके बारेमे यही विचार चल रहा है। अिमीलिअे तो मैंने अपनी लावण्याको बहुत अर्सेसे विपिनका मन जाननेके लिअे कह रखा है। अिम जमानेमे पहले लड़केका मन जान लेना ठीक होता है, ताकि हमारी बात कहीं बिगड़ न जाअे। (दरवाजेके बाहर रास्तेपर निगाह दौड़ाते हुअे) अुमे मैंने आज आनेको कहा तो था। अबतक आअी क्यों नही ?

(मार्गपर अेक युवती आती दिखाअी देती है। अुसे देखते ही)

नीलिमा :—लो, वह आ रही है ! लावण्या अैमी नहीं कि अपने दिअे हुअे समयको न निभाअे।

(अन्दर जाते हैं। क्षण भर बाद वे लावण्याके साथ वापम लौटते हैं। लावण्या सत्रह-अठारह वर्षकी जिन्दादिल चंचल लड़की है।)

लावण्या :—(हँसते-हँसते) : मामी, आज तो मेरे बड़े भाग जो मामा मुझे लिवाने आअे।

नीलिमा :—मुँहबोली भानजीको मामा जाकर क्यों न लिवा लाअेंगे ? आओ बहन, बैठो।

(अपनी बगलमे सोफेपर बैठाती है।)

लावण्या, क्या हाल है ? तुम तो आजकल दिखाअी ही नहीं देती।

लावण्या :—दिखाअी कैसे देती ? रात-दिन आपके काममें जो जुटी रहती हूँ।

कमलनयन:—(आराम कुर्सीपर बैठते हुअे): तुम तो बड़ी सयानी लड़की हो, लावण्या, मानो तुम्हें दिनभर फुरसत ही न मिलती होगी।

लावण्या :—सुन लीजिअे, मामी, यह काम करनेका पुरस्कार दे रहे हैं।

नीलिमा :—ये तो हैं ही अैसे। (फिर अुत्सकतासे) मगर लावण्या, तुम्हें तेरे मामाने जो काम सौंपा है अुसका क्या हुआ? कुछ खोज-खबर मिली?

लावण्या :—(अिठलाते हुअे): अूं हुँ! यों कोअी मुफ्तमें खोज-खबर थोड़े ही निकालनी है।

(कमलनयन ठहाका मारकर हँसता है।)

नीलिमा :—तुम्हें मुँहमांगा अिनाम मिलेगा। मेरी अच्छी लड़की, मेरा अितना काम किसी प्रकार कर दे।

लावण्या :—यह तो जैसा विपिन भाअी कहते हैं अंग्रेजों जैसी बात हुअी। अभी हमें आप लोग निभा लीजिअे, बादमें हम आपको बहुत अिनाम-अिकराम देंगे। आजाद कर देंगे। लेकिन मैं अिस प्रकार भुलावेमें पड़नेवाली नहीं, मामी! आखिर विपिनकी शिष्या जो हूँ।

नीलिमा :—अच्छा तुम्हें क्या चाहिअे, बोलो।

कमलनयन :—(कुर्सीपर बैठे-बैठे ही): अितना भी नहीं समझती? अिसे चाहिअे अिनाम, और वह भी पेशगी। तो अिसे अिनाममें अेक बढ़िया चपत क्यों नहीं लगा देती! बड़ी शोख बनती है।

(सब हँसते हैं।)

लावण्या :—आपके जीमें आअे सो दीजिअे, पर काम तो मुझसे ही निकालना है न! (खड़ी होकर) अच्छा मामी, मैं मामाको शोख लगती हूँ तो यह चली। अेक तो कोअी काम करता है तो अुसकी कोअी कदर नहीं...... (नखरेसे) और अिनाममें तमाचा!

नीलिमा :—तुमने कौन-सा काम किया, लावण्या? (अुसे अपने नजदीक खींचती है) अिन्हें न सही, लेकिन मुझे तो सुना।

लावण्या :—(गुस्सेके लहजेमें) अूं हुं।

कमलनयन :—यह क्या कहेगी ? अुसने अिसे पीठपर हाथ ही नहीं रखने दिया होगा।

लावण्या :—हाँ, हमे कौन हाथ रखने देगा ?

नीलिमा :—(कमलनयनसे): आप भी बेचारीको क्यों फिजूल परेशान कर रहे हैं ? (लावण्यासे) सुन लावण्या, तुम तो दोनों अिस प्रकार हँसी-दिल्लगीमें समय गँवा रहे हो और यहाँ मेरी जान मुँहको आ रही है। बोल, विपिन क्या कहता है ? अुसका क्या विचार है ?

लावण्या :—मामी, क्या दूसरेके मनकी बात अितनी आसानीसे मालूम की जा सकती है ?

कमलनयन :—नहीं, हरगिज नहीं, अिसके लिअे तो तपस्या करनी पड़ती है ; और यह भला अिस मूर्ख शिरोमणिको कैसे आ सकती है ?

लावण्या :—(शिकायत करते हुअे) : देखो मामी, फिर वही.......

नीलिमा :—अब आप जरा चुप भी रहेंगे ? वह बात कह रही है तो अुसे सीधी तरहसे कहने भी न देंगे। (फिर लावण्यासे) क्यों विपिन तुम्हें अिन दिनों मिला था ?

कमलनयन :—अरे तुम अितना भी नहीं समझती ? वह न मिला होता और अिसके हाथ कुछ न लगा होता तो यह छोकरी अितनी शेखी किस बूतेपर बघारती ?

(हँसता है)

लावण्या :—आप भी कमाल करते हैं, मामा। (फिर गम्भीरतासे नीलिमा देवीकी ओर मुड़कर) आजकल मैं विपिनसे कअी बार मिली हूँ, मामी।

नीलिमा :—(आतुरतासे) क्या कहता था ?

लावण्या :—अुसे तो देशभक्त होना है।

कमलनयन :—(आनन्दित होकर) क्यों न होगा।

नीलिमा :—(भयभीत होकर) : अिसके क्या मानी, लावण्या ? मुझसे मजाक तो नहीं कर रही हो ?

लावण्या:–(अेक कुर्सी खींचकर दोनोंके बीचमें बैठते हुअे) : अच्छा अब मजाक नहीं, सच बात कहती हूं ! विपिनके साथ चाहे जो बात कीजिअे, मगर थोड़ी ही देरमें कहीं न कहींसे अुसमें राजनीति टपक ही पड़ती है। अुसे तो अेक प्रकारकी धुन लगी है अुस बातकी। और मजा यह कि वह है भी बड़ी छूतवाली। मेरा तो खयाल है कि अगर कुछ दिन मैं अुसके साथ रहूं तो मुझे भी राजनीतिके सिवा दूसरी कोअी बात नहीं सूझेगी।

नीलिमा:–(हँसकर) वह तो है ही अैसा। जब किसी बातकी धुन लगी तो अुसके पीछे दीवाना हो जाअेगा, किन्तु लावण्या, भले वह यह सब करता रहे, लेकिन शादीके बारेमें क्या कहता है ?

लावण्या :–मैंने कहा न, अुसे किसी दूसरी बातमें रस ही नहीं आता। अच्छा अेक बात कहूँ ? (जरा शरमाकर) मैं भला आप बुजुर्गोंसे तो क्या कह सकती हूँ, मगर हाँ, मैं भी अब बिलकुल बच्ची नहीं हूँ. . . .

कमलनयन :–(हँसकर) दरअसल ?

नीलिमा:–मगर सुनिअे तो।

लावण्या:–अिसलिअे मैं भी अितना तो जानती हूँ कि अुसके कॉलेजकी और दूसरी अनेक लड़कियाँ अुसके आसपास मँडराने लगी हैं। अुसके पीछे पागल-सी हो रही हैं। लेकिन विपिनको तो मानो यह सब देखनेके लिअे आँख ही न हो अिस प्रकार वह घूमता रहता है।

नीलिमा :–(हर्षसे) यों तो मेरा विपिन किसीकी ओर आँख अुठाकर देखे––अैसा नहीं है ! (फिर कुछ चिन्तित स्वरमें)लेकिन तुमने अुसे समझाया नहीं, लावण्या ! कि माँको अुसकी शादी करनेकी कैसी लालसा लगी है !

लावण्या :–सो तो मैं कहाँ चूकनेवाली थी ? अुलटी-सीधी अनेक बातों द्वारा अिस अेक ही बातको अुसके मनपर जमानेके लिअे मैं अितने दिनोंसे कोशिश कर रही हूँ। किन्तु हर समय वह हँसीमें ही बात अुड़ा देता है। कभी कहेगा 'अभी तो मैं पूरा जवान भी नहीं हुआ, लावण्या, फिर शादीकी बात कैसी ?' तो कभी चिन्तामग्न होकर कहेगा, 'जहाँ भारत ही अैसा गुलाम है वहाँ विवाहकी बात ही बड़ी बेतुकी लगती है ? पहले अिसे आजाद तो बनाअें।' और अधिकतर तो बातको हँसीमें ही अुड़ा देता है।

नीलिमा:–(चिन्तित होकर) तब तो (कमलनयनसे) आप ही अुससे सीधी बात कर लीजिअे न। वह लावण्याकी कोअी बात सुननेवाला नहीं।

कमलनयन :–मगर अुसे शादी ही न करना हो तब.......

नीलिमा :–शादी कैसे नही करेगा ? अैसा भी कही होता है ? आप ही ढील देते है अिसीलिअे......

(रुआँसी हो जाती है)

लावण्या :–लेकिन मामी, अेक बात कहूँ ?

नीलिमा :–(फिर अुत्साहमें आकर) कहो, बहन ! क्या कोअी तुम्हारे ध्यानमें है ?

लावण्या :–मेरा अन्तर कहता है कि विपिन अैसी अूलजलूल बात भले ही करता हो और माना कि वह यह सब दिलमे कह रहा हो–किन्तु फिर भी अुसकी नावमें कही छोटीसी दरार पड़ी हो, तो आश्चर्य नहीं।

कमलनयन :–(खड़े होकर) क्या कह रही है, लावण्या ?

लावण्या :–यह तो मुझे लग रहा है, हालाँकि अैसा लगनेका कोअी पक्का सबूत नहीं मिला है, फिर भी अैसा लगता जरूर है। अभी पिछले कुछ दिनोंसे वन्दना, जगकिशोर बाबू है न, जो बरसोंसे विलायतमें रहते थे (मामा-मामी दोनों स्वीकृति सूचक सिर हिलाते है) अुनकी लड़की वन्दना-का विपिनसे मेलजोल बढ़ा है और जहाँ किसीकी दाल नहीं गली, वहाँ वह कामयाब हो जाअे, तो ताज्जुब नही।

कमलनयन :–(कमरेमें घूमते हुअे): हाँ, मैंने भी देखा है। लेकिन वह तो बड़ी चुलबुली है। अुसे अुसकी राजनीति आदिमें कोअी दिलचस्पी नहीं।

(नीलिमादेवी अुत्कंठासे लावण्याकी ओर देखती है।)

लावण्या :–अिसीलिअे तो मैं कहती हूँ कि यदि वह बाजी मार ले, तो मुझे आश्चर्य नही होगा। विपिन भी अुसके साथ हँसी-दिल्लगी करने लगा है। वह भी तो अुसीके कालेजमें भरती हुअी है न ? और वह जब अिन लोगोंकी गम्भीर बातोंका मजाक अुड़ाती है, तब विपिन गुस्सा होनेके बजाय

हँस देता है। बल्कि कोअी नाराज भी होता है तो विपिन अुसे यह कहकर समझा देता है कि—'यह तो लहरी है। अिसपर क्या गुस्सा किया जाअे?' अथवा 'अिसकी अैसी हँसी-मजाकके बिना क्या हम लोगोंका जीवन बोझिल नही हो जाअेगा?' मामी अिस वन्दनापर नजर रखना।

नीलिमा:—वह तो पंछी है। (निराशासे) विलायत हो आअे अुसके माँ-बाप। वे अुसे हमारे यहाँ क्यों देने लगे?

लावण्या:—क्यों नहीं देंगे? विपिन जैसा लड़का कलकत्तेमें तो क्या सारे बंगालमे नहीं मिलेगा। मामी, आपको पता नहीं यहाँके युवकोंमें अुसकी कितनी कीमत और अिज्जत है? अुसे हर कोअी चाहता है। (हँसकर) और आपकी पंछी वन्दना तो अिस शाखाके आसपास ही रात-दिन पंख फड़फड़ाती रहती है।

नीलिमा:—यह लड़की मिल जाअे, तो बड़े भाग! क्यों ठीक है न?

कमलनयन:—अपने या लड़कीके?

लावण्या:—लड़कीके ही। और वह भी यह बात खूब जानती है, मामी। अिसीलिअे तो वह जहाँ तक होता है विपिनका कभी पीछा नही छोड़ती। अच्छा, तो मैं अब चलूँ? (खड़ी होती है। खड़े होते ही अुसकी दृष्टि मार्गपर पड़ती है। अेक युवक और युवती मार्गपर चलते दिखाअी देते हैं। देखतेही अुमंगसे धीमी आवाजमें) मामा-मामी, खड़े होअिअे। देखिअे यह विपिन और वन्दना ही जाते हुअे मालूम होते हैं। शायद विपिन अुसे घर छोड़ने जा रहा होगा।

नीलिमा:—(खड़ी होकर मार्गकी ओर देखती है। अितनेमें वे लोग मोड़पर घूम जाते हैं:) (हर्षसे) कैसी अच्छी जोड़ी है।

(तीनों दौड़कर कठघरेके पास जाते हैं और देर तक मार्गकी ओर देखते रहते हैं)।

(परदा गिरता है)

चौथा दृश्य

स्थान--पूर्ववत ।

समय--दो-चार माह बाद।

(कमलनयन बाबूके दीवानखानेके अगले भागमे अेक झूलती आरामकुर्सी पड़ी है। अुसके आस-पास दो-चार सामान्य कुर्सियाँ पड़ी है। अेक तिपाअी-पर कुछ पुस्तकें रखी है। परदा अुठता है तब विपिन मुकर्जी विचारग्रस्त दशामें अिधरसे अुधर चक्कर लगा रहे है। अुम्र अिक्कीस-बाअीस वर्षकी। अेकदम स्वस्थ भरीपूरी देह और तेजस्वी चेहरेका युवक। अुसने रेशमी चौड़ी आस्तीनका कुरता और बंगाली ढंगकी धोती पहन रखी है। अुसके बालोंकी लटे आकर्षक रूपमे अुसके चेहरेपर बिखरी हुअी है।)

विपिन:-(चक्कर लगाते हुअे गुनगुनाता है)

सरफरोशीकी तमन्ना अब हमारे दिलमें है।
देखना है जोर कितना.........

(बरामदेसे मार्गकी ओर देखते हुअे)

अभी तक पिताजी क्यों नही आअे? (अधीरतासे हाथो की मुट्ठियाँ भींचते हुअे) पता नहीं कब आअेगे?

(फिर वही पंक्ति गुनगुनाते हुअे चक्कर लगाता है कि अितनेमें बाहर दरवाजेपर दस्तक पड़ती है। विपिनके चेहरेका तनाव आनन्दमे बदल जाता है)

विपिनः– (खुशीमें चुटकी बजाकर) आ गअे !

(बाहर दौड़ जाता है)

लेकिन कुछ क्षणों बाद ही जब वह वापस लौटता है तब असके चेहरेपर थोड़ी विचारग्रस्तता और प्रसन्नता दोनोंके मिश्रित भाव दिखाअी देते हैं। अुसके साथ वन्दना भी कमरेमें दाखिल होती है।

वन्दना अठारह-अुन्नीस वर्षकी खूबसूरत नौजवान लड़की है। अुसका खूब स्वस्थ व सुडौल बदन और गौर लावण्यमय चेहरा बड़ा आकर्षक प्रतीत होता है। अुसके चेहरेमें प्रसन्नता टपक रही है।)

वन्दनाः–(हँसते हुअे) कैसे पकड़ा! मुझे पूरा अितमीनान था कि आप घरपर ही होंगे।

विपिन :–(हँसकर) : वाह, मानो बड़ी विजय प्राप्त कर ली। अिसमें अैसा कौनसा बडा शेर मारा, जो अितनी आनन्दविभोर हो रही हो।

वन्दना :–(अभिमानसे) : आपको पाना क्या कोअी छोटी-मोटी विजय है ? (थोड़ी लजाकर) हरगिज नही।

विपिन :–(विचारमग्न) : तो तुम्हें क्या पूरा यकीन हो गया है, वन्दना, कि तुमने मुझे प्राप्त कर लिया है।

वन्दना :–(लाजसे गडकर) : मैं नही जानती। (फिर जरा लाड़में आकर) भूलचूकसे आदमीके मुँहसे कभी कोअी बात निकल जाअे, तो अुसे अिस तरह तंग थोड़े ही किया जाता है।

विपिन :–(गम्भीर होकर) : नहीं, मैं मजाक नहीं कर रहा, वन्दना ! मगर सच कहो, क्या तुम्हें पूरा यकीन है ?

वन्दना :–(अुसके गम्भीर चेहरेकी ओर देखकर हँस अुठती है।) लेकिन अिसमें अितना परेशान होनेकी क्या बात है ? मानो आपका सर्वस्व छिन गया हो । जब हम विलायतमें थे, तब मेरी अेक सखी तो कहती थी कि..........

विपिन :–विलायतकी बातसे मुझे क्या वास्ता ? तुम अपनी बात कहो ! (गम्भीर मुख-मुद्रासे) मैंने पूछा अुसका जवाब दो।

वन्दना :–(क्षण-भरके लिअे स्वयं भी गम्भीर हो जाती है) अिसमें मुझसे क्या पूछते हैं ? अपने ही दिलसे पूछिअे न।

विपिन:–(अकेला ही बोलता हो अिस प्रकार) मेरा ही दिल अगर जवाब दे देता, तो तुमसे पूछता क्यों ?

वन्दना :–(निकट जाकर) आज अिस प्रकारकी बातें क्यों कर रहे हैं ? आपका चेहरा अितना मुरझाया हुआ क्यों है ? क्या कुछ हुआ है ?

विपिन :–(फीकी हँसी) : नही कुछ नहीं हुआ। होनेको क्या है ?

वन्दना :–भले ही आप न कहें। (गिरी हुअी आवाजसे) मगर आपका यों अुदास चेहरा मुझे अच्छा नहीं लगता !

विपिन :–(अुसकी ओर टकटकी लगाकर) सचमुच ?

(अेकाध क्षण वन्दना अुसकी आँखोंमें आँखें डालकर देखती है। फिर मुँह मोड़कर)

वन्दना :–ओ हो ! जैसे महाशय जानते ही नही ! (फिर अेकाअेक बात पलटकर) अरे हाँ, आपकी अिन अुलटी-सीधी बातोंमे मैं असली बात तो कहना भूल ही गअी। (अुत्साहसे) विपिन, क्या हम हवाखोरीको चलेंगे ? आज शरद् पूर्णिमा है। मैं अपनी कार भी साथ लाअी हूँ। चलो, कही हम दूर-सुदूर––मीलोंतक घूम आअे।

विपिन :–और ?

वन्दना :–और क्या ? कहीं नदीके तटपर अेकाध सुरम्य स्थानपर बैठेंगे। घंटों बीत जाअें, तो भी हर्ज नहीं। मैं पिताजीकी अिजाजत ले आअी हूँ।

विपिन :–(घड़ीकी ओर देखकर) मगर अभी-तक बाबा क्यों नहीं आअे ?

वन्दना :–(ठहाका मारकर) वाह्-वाह ! गोया आपको भी बाबाकी अिजाजतकी जरूरत है। (अपने हाथपर बँधी घड़ीकी ओर देखकर नकल करते हुअे) अभी तक बाबा क्यों नही आअे ?

विपिन :–(हँसकर अुल्लाससे अुसकी ओर देखते हुअे) तुम भी कोअी कम नहीं हो, वन्दना ! अच्छों-अच्छोंको छका दो !

वन्दना :–लेकिन आपके सिवा।

विपिन :–क्यों, अैसा क्यों कहती हो ?

वन्दना :–नहीं तो मेरे 'चलो' कहते ही आप कबके ही चल पड़ते ? यो व्यर्थकी बातोंमें यहाँ समय न गँवाते।

विपिन:–मुझे भी यही लगता है, वन्दना, कि मै चल पड़ूं, तुम्हारे साथ बिना किसी सोच-विचारके, बिना अेक पलकी देर किअे। और दो-चार मील नही, सैकड़ों-हजारों मील दूर, न केवल कुछ घंटोंके लिअे बल्कि अनन्त बरसो और समस्त जीवनके लिअे। मुझे और कुछ नहीं चाहिअे। बस, केवल तुम्हारी यह स्नेहसिक्त मधुर वाणी और प्यारसे छलकता हुआ हृदय मेरे लिअे काफी है। तुम्हारी अुर्मियोंके वर्णनातीत अखंड महासागरकी अुत्ताल तरंगोंपर मै रात-दिन तरंगित होता रहूँ, और यह समस्त जीवन अेक मनोरम आसमानी अनन्त सुषुप्तिके सदृश बन जाअे। लेकिन वन्दना......

वन्दना :–अब भी लेकिन-परन्तु बाकी ही है ?

विपिन :–(सुना न हो अैसे) : लेकिन वन्दना, यह जीवन सुषुप्ति नही, जागृति है। पसन्द न आअे अैसी, चित्तको क्लेशमय कर दे अैसी जागृति है, और जैसा कि वर्डस्वर्थने कहा है : The world is too much with us अिसलिअे अिसे भी कैसे छोड़ सकते है ?

वन्दना :–(विपिनके बिलकुल समीप जाकर) : विपिन, आज जरूर आपको कुछ हो गया है। क्या मुझसे भी न कहेंगे ?

विपिन :–मुझे कुछ नही हुआ, वन्दना ! सचमुच कुछ नहीं हुआ।

वन्दना :–तब चलिअे न ! आजका कार्यक्रम मैंने मन ही मन कितने दिनोंसे तय कर रखा था।

विपिन :–(क्षमा माँगते हुअे) : मगर आज नहीं, वन्दना।

वन्दना :–(निराश होकर) : क्यों ? अिस वर्ष फिर शरद् पूर्णिमा थोड़े ही आनेवाली है।

विपिन :–(फीकी हँसी हँसकर) : यह तो मैं भी जानता हूँ, मगर आज नहीं। तुम निराश होगी, अिस बातका मुझे भी दुख है। किन्तु आज मुझे बाबासे कुछ विशेष चर्चा करनी है। (फिर शिकायतके स्वरमें) और बाबा देखो आ ही नहीं रहे हैं !

वन्दना :–आज ही अैसा कौन काम आ पड़ा है ? क्या यह कल नहीं हो सकता ?

विपिन:–यदि यह सम्भव होता तो क्या मैं तुम्हारे साथ चला न चलता? मुझे तुम्हारे साथ जानेकी कितनी तीव्र अिच्छा है, यह भला तुम कैसे समझोगी? (कोमल स्वरसे) तुम कितनी प्यारी लगती हो, वन्दना ! बेहद प्यारी ! (स्नेहसे अुसकी ओर देखता है।)

वन्दना :–(स्नेहभरी आँखोंसे जवाब देती है) : तो कोअी हर्ज नहीं, विपिन। लेकिन दूसरी बार, याद रखिअे, मैं आपको अिस प्रकार हरगिज नहीं छटकने दूँगी। कहिअे फिर कब चलेंगे ?

विपिन :–चलेंगे, जरूर चलेंगे। आज मैं जरा बाबासे बात कर लूँ तो सारा पता चल जाअेगा। फिर वक्त रहा तो हम खूब-खूब घूमेंगे।

वन्दना :–(आश्चर्यसे) : वक्त रहा तो ......

(वन्दना कुछ बोलना चाहती है, किन्तु विपिन कटघरेकी ओर चल देता है और वहाँसे मार्गपर अेक नजर डालकर वापस लौटता है।)

विपिन :–कहीं भी बाबा दिखाअी नही देते। अुन्हें आनेमें अभी पाँच-दस मिनट तो लगेंगे ही। चलो, अितनी देर चाहो तो तुम मुझे अपनी अिच्छानुसार कहीं भी ले चल सकती हो। मगर अिस शर्तपर कि दस मिनट बाद तुम मुझे यहाँ पहुँचा दोगी !

वन्दना :–(अुत्साहसे) : मंजूर है।

विपिन :–(चलते-चलते) : शरद् पूर्णिमा तो फिर दूसरे साल आअेगी। (वन्दना तेजीसे आगे बढ़ जाती है। विपिन अुसे या अपने ही मनसे कह

रहा हो—अिस प्रकार बोलता हुआ बाहर निकलता है) मगर तुम्हारे साथ दुबारा घूमनेको मिलेगा या नहीं यह कौन जाने ? (जाता है।)

(कुछ क्षण कमरा सूना रहता है। बादमें बाबू कमलनयन प्रवेश करते हैं। वे बड़े आनन्दित मालूम होते हैं। दीवानखानेमें रखी हुअी आराम कुर्सीपर जाकर बैठते ही 'नीलिमा' आवाज देते हैं। नौकर हाजिर होता है।)

नौकर :–माँ तो बाहर गअी हैं, सरकार।

कमलनयन :–अच्छा ? मेरा चुरुटका डिब्बा दे जाओ।

नौकर :–जी सरकार। (जाता है।)

(कमलनयन कुर्सीपर आरामसे फैलकर बैठते है। नौकर चुरुटका डिब्बा रख जाता है। अुसमेसे अेक चुरुट निकालकर सुलगाते हैं और टेबलपर पड़ी हुअी पुस्तकोंमेंसे अेक अुठाकर चुरुट पीते-पीते अुसके पन्ने अुलटने लगते हैं कि अिसी बीच विपिन आ जाता है।)

विपिन :–(प्रवेश करते ही) आ गअे, बाबा ! कब आअे ? आज कुछ अधिक देर हुअी ?

(आराम कुर्सीके पास पड़ी हुअी अेक कुर्सीको खींचकर विपिन अुनके निकट बैठता है।)

कमलनयन :–बस चला ही आ रहा हूँ। बैठो।

(पुस्तकके पन्ने अुलटना-पलटना चालू रहता है। दो-चार क्षण शान्ति छा जाती है। बात करनेको आतुर हो, अिस प्रकार विपिन कुछ हलचल करता है। अन्तमें कहता है :)

विपिन :–बाबा, आज आप क्या सोच रहे हैं ?

कमलनयन :–आज ? विपिन, आज मैंने लेनिनकी बहुत बढ़िया पुस्तक पढ़ी है। अुसीके बारेमें सोच रहा था।

विपिन :–मैंने भी अभी ही लेनिन पढ़ा। हमारे स्टडी ग्रूपमें मार्क्स और लेनिनके विषयमें आजकल खासा अध्ययन चल रहा है। लेनिन बड़ा जबरदस्त आदमी है न ?

कमलनयन :–जबरदस्त ? बल्कि असाधारण कहो। और अुसकी विचारसरणीमें भी कहीं अुलझन नहीं, सीधी और साफ बात है।

विपिन :–हाँ, यही होना चाहिअे ! नहीं तो वह अितना बड़ा नेता कैसे बनता ?

कमलनयन :–(हँसकर) यह बात नही, विपिन ! हमारे ही नेताओंको देखो, गाँधी भी अपवाद नहीं है। अिनकी विचार-सरणी क्या अनेकों बार कअी रंगकी पचरंगी —— जैसी नही लगती ? लेकिन फिर भी यह निर्विवाद है कि ये ही लोग हिन्दुस्तानके नेता हैं।

विपिन :–यहाँ तो सारी परिस्थिति ही भिन्न है, बाबा ! जारशाहीके लाखों जुल्म होनेके बावजूद रूसके लोगोंके हाथोंमें हथियार थे यह बहुत बड़ी बात थी। और हमे तो (गहरे तिरस्कारसे) बदमाशोंने पहलेसे ही निश्शस्त्र कर दिया है। (जोशमें) नहीं तो अिन्हें भी जरा दिखा देते, फिर भले ही अिनके विशाल साम्राज्यपर सूरज कभी अस्त न होता हो।

कमलनयन :–मगर बिना हथियारके भी गाँधी अिन्हें कम परेशान नही करते !

विपिन :–हाँ, यह बात सही है। लेकिन अिससे थोड़े-बहुत सुधार ही हो सकते हैं, आजादी कदापि नही मिल सकती ! रक्तकी होली खेले बिना क्या आजादी कभी सम्भव है ? (खड़ा हो जाता है।)

कमलनयन :–(कुर्सीपर सीधे बैठते हुअे) बैठो विपिन, अिस प्रकार अुत्तेजित क्यों होते हो ?

विपिन :–नहीं, अुत्तेजित होनेकी कोअी बात नहीं।

कमलनयन :–तब क्या बात है ? तुम्हारे हाव-भावसे तो लगता है कि कहीं कुछ न कुछ जरूर है। क्या मुझे नहीं कहोगे ?

विपिन :–(दो-अेक क्षणके लिअे कमलनयनकी आँखोंकी ओर देखकर जल्दीमे धीमी आवाजसे) बाबा, मैं आपसे कुछ खास बात करने आया था।

कमलनयन :–(स्नेहसे) अैसी क्या बात है, बेटा ? अिस प्रकार बावले क्यों हो रहे हो ? आओ, बैठो, और निश्चिन्त मनसे बात करो।

(दोनों अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं। विपिन पिताकी ओर थोड़ा झुककर।)

विपिन :–(हँसकर) यों घबराने-जैसी कोअी बात नहीं है, (फिर गम्भीर होकर) मगर बाबा, बहुत दिनोंसे दिलमें अेक ही बात अुठती रहती है और वह है भारतकी आजादी। हम कुछ दोस्त साथमें मिलकर अिसी बातका अध्ययन कर रहे हैं। दूसरे देशोंकी क्रान्तियोंके अितिहास हम पढ़ गअे हैं। और अिन सबके परिणाम- स्वरुप अन्तमें अेक ही निर्णयपर पहुँचे हैं कि हिन्दुस्तानमें महात्माजी जो प्रयोग कर रहे हैं, वह भले ही बहुत अुच्च आशयवाला हो, पर अुससे शीघ्र स्वाधीनता हरगिज नहीं हासिल हो सकती। अिस प्रकार कहीं अिन आततायियोंके हृदय पलट सकेंगे ? और धीरे-धीरे पलटें भी, तो हममें अुतना धीरज नहीं।

कमलनयन :–तो तुम लोग क्या करना चाहते हो ?

विपिन :–जिसे अदने-से-अदना आदमी भी कर सके। अिसमें हमें कोअी बहुत बड़ी फौज या धूमधामकी जरूरत नहीं होगी।

कमलनयन :–यानी ?

विपिन :–(धीमे मगर सचोट) आतंकवाद। या तो हम नहीं होंगे या वे नही होंगे।

कमलनयन :–(कुर्सीपर अुठने बैठने है) बेटा ! विपिन !

(टकटकी बाँधकर विपिनको देखते है। कपालपर आअे हुअे पसीनेको पोंछनेके लिअे जेबसे रूमाल निकालते हैं। मुँहसे चुरुट निकालकर अलग रख देते है।)

विपिन :–बाबा, हमें तो बस यही मार्ग सूझता है और अिसमें हम अकेले नहीं है। सारे हिन्दुस्तानमें हमारे जैसे नौजवानोंका जाल बिछा हुआ है। हम यह भी जानते है कि अिसमें हमें अपना बलिदान देना होगा, मगर अितना निश्चित है कि हमारा बलिदान निरर्थक नहीं जाअेगा।

कमलनयन :–(धीरेसे) यह तो मै भी समझता हूँ, बेटा !

विपिन :–अिसीलिअे तो मैं आपके पास आया हूँ। (भावनापूर्वक) आपने मुझे पुत्रकी अपेक्षा मित्र अधिक माना है। आपसे मैंने कितना पाया है! यही कारण है जो आपसे यह बात भी कहे बिना नहीं रह सका। आपकी आज्ञा या अनुमतिके बिना मुझे किसी काममें अुत्साह और विश्वास नही हो सकता। (फिर अनुनय करते हुअे खड़े होकर) बाबा, मैं अिस रास्ते जा सकता हूँ? आपकी अिजाजत है न?

कमलनयन :–(विचारमग्न) हम क्या बात कर रहे थे और चले गअे किस बातपर?

विपिन :–मुझे तो यही बात करनी थी। यों तो विचारोंकी रेलपेलसे कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। अिन सबमेंसे पार होकर अब मुझे किसी अेक निश्चित मार्गको अपनाना चाहिअे। और अिस मार्गपर जानेके लिअे मैं आपकी आज्ञा लेने आया हूँ।

(पिताकी ओर देखता है।)

कमलनयन :–(कुछ देर चुप रहनेके बाद) अिस मार्गसे जानेमें कितनी मुसीबतें और कितने खतरे अुठाने होंगे, विपिन, अिसकी शायद तुम लोगोंको कल्पना हो सकती है, मगर स्पष्ट खयाल तो कैसे हो सकता है? क्या तुम यह सब बरदाश्त कर सकोगे?

विपिन :–कल्पनाकी अुड़ानतक तो हरेक बातका खयाल किया ही है, बाकी (हिम्मतसे) मौका आनेपर देख लेंगे। क्या अितनी शक्ति हमें काली माँ नहीं देंगी?

कमलनयन :–(खड़े होकर) देंगी, देंगी, जरूर देंगी। मगर विपिन, ...

(क्या कहा जाअे यह नहीं सूझता, अिसलिअे मौन रहते हैं।)

विपिन :–(खड़े होकर) बाबा......

कमलनयन :–(कोअी नअी बात सूझी हो अिस प्रकार) : विपिन, महात्माजी हाल ही में कोअी जबरदस्त आन्दोलन शुरू करनेवाले हैं। अुसमें

तुम सब क्यों नही शामिल हो जाते ? आन्दोलनको तो बल मिलेगा ही, साथ ही तुम लोगोंको कार्य-क्षेत्र भी मिल जाअेगा।

विपिन :–अिसपर भी हमने विचार तो अवश्य किया है। मगर अिस पद्धतिमें हमे श्रद्धा नहीं है। गीताजीमें कही गअी 'स्वधर्मे निधनं श्रेय:'वाली बातही सच्ची लगती है। अुलटे, क्या यह नहीं हो सकता, बाबा, कि हमारी क्रान्तिसे अुनके हाथ मजबूत होगे और दुश्मनको दो मोर्चोंका सामना करना पड़ेगा ? अितिहासमे कहींभी अिस पद्धतिसे कभी आजादी मिली है? स्वाधीनताकी अुषाको तो लाल-लाल रक्तका तिलक करके ही अुदय होना पसन्द है। और वह रक्त न केवल शहीदोंका, बल्कि जुलिमयोंका भी हो, नहीं तो अुसे तृप्ति कैसे होगी ?

कमलनयन :–(टहलते हुअे) : बात तो सही है। स्वाधीनताकी देवीको रक्तकी ही आहुति दी जाती है और देश-देशमे, हर युगमें अिस आहुतिके देनेवालोंकी कभी कोअी कमी नही रही। रूस या अिटली, आयर्लेंड या अिजिप्त, सब जगह यही हुआ है। रक्तकी आहुति और अनन्त यातनाओंको हँसते-हँसते स्वीकार करना। ओह् ! अुन आहुति देनेवाले शहीदोकी तसवीरें कैसे आँखोके आगे तैर रही है ! कोअी असह्य सर्दीमें बर्फमें कदम बढ़ाअे जा रहा है तो कोअी जेलखानेमें सड़ रहा है। और आजादीके बलि-पन्थियोंकी जीवन-डोरको काटनेवाली फाँसीकी रज्जुको भी ये लोग कितने प्रेमसे चूमते है ! खुदीराम और कानाअी, बारिन और अुपेन ...... अिन लोगोंके नाम तो अितिहासमे स्वर्णाक्षरोंमें लिखे जाअेगे। (रुककर, विपिनकी ओर देखकर, अपने ही विचारोंकी धुनमें) और अिस विपिनको भी भारतमाता अपने गलेसे लगाअे, अितिहासमें अिसका नाम सुनहरे अक्षरोंसे लिखा जाअे तो अुसके माता-पिता धन्य हों और अक्षय कीर्तिके अधिकारी बनें। (गद्गद् कंठसे) मगर मेरे नसीबमें यह कहाँ ? (विपिनके नजदीक जाकर अुसे देखता है) तुम कैसे सुकुमार हो, बेटा ! फिर भी यौवन खिल अुठा है। कभी तुम नन्हे, अर्ध विकसित कोमल कली जैसे थे, मगर आज पूर्ण विकसित कमल जैसे हो गअे हो ! तुम्हें जानेको मैं हाँ कैसे कहूँ ? तुम्हारी यह जवान काया हमेशाके लिअे नष्ट न हो जाअेगी ? चाहे फिर अक्षय कीर्तिही क्यों न मिले,लेकिन मैं यह कैसे सहन कर सकता हूँ ?

(पीछे घूम जाते हैं। फिर विपिनके पास आते हैं। अुसके शरीरपर स्नेहसे हाथ फेरते हैं। अन्तमे सिर हिलाकर जरा जोरसे :)

कमलनयन :–मेरी हिम्मत नहीं होती, विपिन !

(कुर्सीपर धम्मसे बैठ जाते हैं। दोनों हाथोंसे मुँहको ढाँक लेते हैं ।)

विपिन :–(दुखपूर्वक) : बाबा, आप ही अैसा छोटा जी करेंगे तो मेरी हिम्मत कैसे बँधेगी ? (गला भर आता है) क्या आप सोचते हैं कि मुझे कुछ नही होना ? आप, स्नेहमयी माँ, वन्दना (अेक क्षणके लिअे मुँह फेर लेता है) यह सुखी और समृद्ध जीवन व सुन्दर संसार . . .(स्वस्थतासे) मगर अिससे क्या हम अपने कर्तव्य-पथसे च्युत हो सकते हैं ?

कमलनयन :–नही हो सकते भाअी, हरगिज नही हो सकते। मैं सब कुछ समझता हूँ, फिर भी कुछ सूझ नहीं पड़ता है। तुम्हें ना कहनेका मतलब है, विपिन, कितनी ही चीजोंमे मुकर जाना। भारत माताकी सेवा, घर बैठे आअी हुअी कीर्ति, तुम्हारी महेच्छा और महत्वाकाक्षा, वीर पुत्रका पिता होनेका गौरव आदि।........मगर दूसरी ओर तुम्हे हाँ भी कैसे कहूँ ? तुम.....तुम.....(गद्‌गद् कंठसे) बेटा, तुम्हे देखते ही दिलमें कितना प्रेम अुमड़ता है अिसकी कल्पना तुम्हे नहीं हो सकती ? और तुम्हारी माँ ? वह तो बेचारी तुम्हारी शादीके लिअे कितनी आतुर हो रही है !

विपिन :–(थोड़ी देर चुपचाप देखता रहता है, फिर गुनगुनाते हुअे) : मगर बाबा, ...मेरा जीवन, मेरी भावना, मेरे आदर्शका क्या होगा ?

कमलनयन :–(मानो कुछ सुना ही न हो, अिस प्रकार खड़े होकर टहलते हुअे) : नहीं भी कैसे कहूँ ? सारा गाँव, सारा समाज और सारा देश प्रशंसाकी झड़ी लगा देगा ! वाह-वाह कर अुठेगा ! और विपिन तुम्हारी भी अभिलाषा तृप्त होगी ! तुम्हारी भावनाअें और आदर्श सिद्‌ध होंगे। तुम्हारा जीवन धन्य हो जाअेगा। फिर मैं कैसे अिनकार करूँ ?

(हाथ झटकते हैं। फिर विपिनके पास जाकर अुसकी ओर अेकटक देखते खड़े रहते हैं। बादमें विपिनका चेहरा अपने हाथसे अूपर अुठाकर अुसकी ओर देखते हुअे धीमी आवाजसे :)

कमलनयन :–पर तुम्हारी हिम्मत होगी, विपिन ?

विपिन :–बस, मैं तो आपकी अनुमतिकी राह देख रहा हूँ।

कमलनयन :–विपिन, तुम न केवल अपनेको बल्कि साथ ही मुझे भी धन्य कर रहे हो। जहाँ-तहाँ लोग हमारी ही बात करेंगे। वे जानेवाले पुत्र और जाने देनेवाले पिताको धन्यवाद देंगे, किन्तु. . . . . किन्तु (फिर अुमंगसे) अब किन्तु-परन्तु कुछ नहीं। जाओ बेटा, भारत माताकी विजय करो, अपने पिताका कुल अुज्वल करो।

(विपिनको आलिंगन करके गलेसे लगाता है। नीलिमादेवी प्रवेश करती है।)

नीलिमादेवी :–(यह दृश्य देखकर हँसते हुअे) बाप-बेटा दोनों यह क्या नाटक कर रहे हैं ? क्या बहुत खुशी हो रही है ? लीजिअे, मैं भी खुश खबर सुनाती हूँ। वन्दनाके पिताजी जगकिशोर बाबू अगले वर्ष विपिनकी शादीके लिअे राजी हो गअे हैं।

(पिताके आलिंगनसे छूटकर विपिन अुनके चरणोंकी रज सिरपर चढ़ाता है। फिर माताकी चरण-रज लेता है और वहाँसे तुरन्त चल देता है। अपनी ओर कमलनयन बाबूको दयार्द्र चेहरेसे देखते हुअे देखकर नीलिमादेवीने कहा): अेकदम मूढ़ जैसे क्या हो गअे ?

(पास जाती है। परदा गिरता है।)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—जेल ऑफिसकी खिड़की।

समय—कुछ महीने बाद दोपहरके चार बजे।

(कमलनयन जेल ऑफिसकी खिड़कीके बाहर खड़े-खड़े अन्दरकी ओर झाँकते हैं। अेक सिपाही विपिनको लेकर आता है। अन्दरके भागमें खिड़कीके पास पड़ी हुअी कुर्सीपर अेक गोरा जेलर आकर रौबसे बैठता है। विपिन खिड़कीके सामने खड़ा होता है। वह कैदीके कपड़े पहने है—रंगीन लकीरोंवाला छोटा जाँघिया और बंडी, सिरपर जेलकी टोपी।

स्फूर्ति और अुत्साह-भरा युवक है। अुसकी आँखे चमक रही हैं और अधरोंपर मुस्कान खेल रही है। कमलनयन अुसे सजल नयनोंमे देखते हैं।)

विपिन—कहिअे बाबा, आ गअे ?

कमलनयन—(नखसे शिखतक अुसे देखकर) हाँ विपिन, कहो, कैसे हो ? थोड़े दुबले हो गअे हो ?

विपिन—(हँसते-हँसते) मै तो मजेमें हूँ और दुबले होने न होनेकी क्या बात है ? कहिअे, माँ कैसी हैं ? वे नहीं आअीं।

कमलनयन—(निःश्वास लेकर) नहीं, वह नहीं आ सकी।

विपिन—(खिन्न स्वरसे) बेचारी माँको बड़ा आघात लगा होगा।

कमलनयन—वह नहीं आओी यही अच्छा हुआ, विपिन! (रुआँसा होकर) तुम्हारी यह दशा और यह दृश्य भला वह किस प्रकार बरदाश्त कर सकती ?

(अुनका चेहरा बिगड़ जाता है। मुश्किलमे रोना रोकते है ।)

विपिन—बाबा, आप भी आज क्या हिम्मत हार जाअेंगे ? मेरे लिअे तो यह अत्यन्त आनन्दका दिन है ।

कमलनयन—(दुखपूर्वक) मै भी आखिर आदमी हूं, बेटा । मेरा हृदय कोअी जड़ पत्थरका नहीं बना है जो न पिघले । आज, कल, परसों, चौथे दिन तो हम दोनों पुत्रविहीन हो जाअेंगे, विपिन ! अेकाकी, निराधार, अर्थशून्य ।

(दोनों हाथोंमें मुँह छिपा लेता है ।)

विपिन—(भावावेशमें) बाबा !

कमलनयन—(वैसे ही दुखभरे स्वरमें) अब नहीं देखा जाता, विपिन । यह विचार ही नही सहा जाता कि तुम्हारा यह रक्त भरा चंचल शरीर, हर्षसे मुसकराता हुआ चेहरा, अितने बरसोंतक प्रतिपल कोअी नूतन आनन्दानुभव कराती हुअी यह तुम्हारी सारी आकृति अिने-गिने घंटोंमें ही विलीन हो जाअेगी, सदा-सर्वदाके लिअे विनष्ट हो जाअेगी और हम दोनों अभागे.........

(ढीले पड़ जाते है ।)

विपिन—(स्नेहसे, हँसनेका प्रयत्न करता हुआ) बाबा, आप तो अिस प्रकार मुझे भी कमजोर बना देंगे । हम दो-तीन फाँसीकी सजावाले युवक आजकल कितने आनन्दमे दिन गुजारते हैं। हमने अपना निश्चित कार्य पूरा किया तो अब अुसका परिणाम भोगनेमें भी आनन्द करना चाहिअे न ? भला क्या अब हम कमजोरी दिखा सकते है और आप भी कैसे दिखा सकते है, बाबा ? आप तो कितने हिम्मतवर है !

कमलनयन—मै जानता हूँ, बेटा ! अिस वक्त अुलटे मुझे तुम्हें हिम्मत देनी चाहिअे, दृढ़ करना चाहिअे, यह सब करना चाहिअे । पिछले कुछ दिनोंसे मैं यही सोच रहा था, कि मुझे तुम्हारे साथ यहाँ कैसा व्यवहार करना चाहिअे और क्या कहना चाहिअे । मैने कितना विचार किया था कि

मैं अपना चेहरा हँसता हुआ रखूंगा, लेकिन विपिन, मेरे प्यारे बेटे, यहाँ तो तुम्हें अन्तिम बार प्रेमसे सहला सकूं, यह भी सम्भव नही है। यह भला सब कैसे सहन हो सकता है? मगर (स्वस्थ होकर) बेटा, मैं अुम्मीद करता हूँ कि जो मरदानगी तुमने जीवनमें दिखाअी है वैसे ही मरदानगी....

(शब्द नहीं निकल पाते, विपिनकी ओर करुण दृष्टि डालते है।)

विपिन—(प्रोत्साहनके स्वरमें) बस, अिन्हीं शब्दोंकी मैंने आपसे आशा की थी, बाबा! मेरे धन्य भाग्य है जो मुझे आप जैसे माता-पिता मिले। (फिर भावनाके आवेशमें) अेक बात कहूँ, बाबा! मैं तो आपका कितना ऋणी हूँ? मुझे तो याद है, अुस दिन मै आपसे अनुमति लेने आया था? अुस समय मुझमें जरा कमजोरी आ गअी थी अिसीलिअे आपके पास आया था। कमजोर मन कोअी बहाना ढूंढ़ रहा था। मगर आपने संभाल लिया। आपका यह अुपकार मै कैसे चुकाअूंगा?

(आँखोंपर हाथ रखता है)

कमलनयन—(चौककर) सच कहते हो, विपिन! सचमुच क्या तुम कमजोर हो गअे थे?

विपिन—दरअसल, मुझे अैसा ही लग रहा था। आप, माँका प्रेम, वन्दना, जीवन और जवानी—सब मुझे अपनी ओर खींच रहे थे। (हर्षसे) मगर जो हुआ, वह अच्छा हुआ, वही अुचित था। अुस दिन यदि मै पीछे हट जाता, हिम्मत हार जाता; तो सारी जिन्दगी मुझे मेरा दिल कितना कचोटता रहता। मगर अब मुझे कोअी दुख नही है, कोअी वासना नही है। मैंने अपना फर्ज अदा किया है। मेरा जीवन अैसा हो रहा है जैसा कि भारतके नौजवानका होना चाहिअे और अीश्वरकी कृपा तथा आपके आशीर्वाद होंगे तो मेरी मृत्यु भी वैसी ही शानदार होगी।

कमलनयन—(मानो कुछ सुन ही न रहा हो) यदि अुस दिन मैं तुम्हें रोक लेता, तो क्या तुम सचमुच रुक जाते, बेटा?

विपिन—(थोड़ा सोचकर) यह कैसे कहा जा सकता है? लेकिन अुस रोज मुझे जरूर कुछ अैसा लग रहा था कि मै शायद रुक जाता।

कमलनयन—तब तो मैंने ही तुम्हें.....

(हिचकी लेता है।)

विपिन—(सींकचोंमे मुंह लगाकर क्षीण आवाजसे) : बाबा, बाबा !

गोरा जेलर—(हाथकी घड़ीकी ओर देखते हुअे) देखो, अब मुलाकातका टाअिम खटम हो रहा है। अेक मिनट रहा।

विपिन—(सींकचोंके बाहर हाथ निकालकर अुन्हें जोड़ता है और सिर नमाते हुअे) : अच्छा बाबा, मैं अिजाजत चाहता हूँ। आप आशीर्वाद दीजिअे।

कमलनयन—(गद्‌गद् कंठसे हाथ अूंचा करके) आशीर्वाद है, बेटा। तुम्हारा कल्याण हो !

विपिन—(थोड़ी क्षीण आवाजसे) माँसे कहिअे मुझे आशीर्वाद दें। अिस जीवनमे मुझे जो सौभाग्य प्राप्त है अुसमें सबसे बड़ा सौभाग्य है माँकी गोद। मेरी ओरसे अुन्हें कहिअे कि वे मेरे कारण दुखी न हों। मैं प्रति जन्ममें अुन्हींकी गोदमें जन्म लेना चाहूँगा।

कमलनयन—कहूँगा, बेटा। सब कुछ कहूँगा।

गोरा जेलर—टाअिम खटम। कैदीको ले जाओ।

(सिपाही विपिनका हाथ पकड़ता है। विपिन फिर अेक बार कमलनयनको नमन करता है। कमलनयन 'अलविदा विपिन' कहकर सीकचोंको पकड़ लेते ह। अुनकी आँखोंसे आँसुओंकी अविरल धारा बहने लगती है।)

(परदा गिरता है)

छठा दृश्य

स्थान : वही कमलनयनका दीवानखाना।

समय : दो महीने बाद, रातके करीब आठ बजे।

(परदा अुठता है तब सोफामेटके सोफेसे सटकर जमीनपर बैठी हुअी नीलिमादेवी सिसकियाँ ले रही है। अुनके अेक हाथमें विपिनकी तसवीर है और दूसरा हाथ सोफेपर पडा है। अुनके वस्त्रोंमें सलवटें पड़ गअी है। केश अस्तव्यस्त हो गअे है, आँखे रो-रोकर सूज गअी है। वे विपिनकी तसवीरको बार-बार अधरों, गालों और छातीसे लगाती है और रोती है।)

नीलिमादेवी--(रोते-रोते) मेरे लालको कौन ले गया ? मुझ अन्धीका सहारा किसने छीन लिया ? (खड़ी होकर तसवीरकी ओर देखते हुअे) मैंने तुझे कितनी अुम्मीदसे पाल-पोसकर बड़ा किया था बेटा, और तू अिस प्रकार दगा देकर चला गया ? मुझे जरा खबर तो देनी थी, कुछ बात तो करनी थी ? (सिसकियाँ लेते हुअे) मेरे विपिन, मेरे लाड़ले, तुझे क्या किसीने रोका तक नहीं ?

(अविरल आँसू बहते है)

(बाबू कमलनयन प्रवेश करते है। नीलिमादेवीके पास जाकर अुसके कन्धेपर हाथ रखते है। नीलिमादेवी चौक कर अुनकी ओर मुड़ती है। तसवीरको जोरसे छातीसे दबाकर आवेशसे बोलती है)

कौन आया है मेरे विपिनको लेने ? नहीं दूंगी, कभी नहीं दूंगी।

कमलनयन—(समभावपूर्वक) नीलिमा ! (शिथिल आवाजमें) रात-दिन यह क्या कर रही हो ?

नीलिमादेवी—(होशमें आते हुअे) ओह ! आप हैं ! मेरे मनमें न जाने क्या-क्या बाते अुठ रही हैं ? मुझसे यह नहीं सहा जाता, किसी भी तरह नहीं सहा जाता, कहिअे, मैं क्या करूं ?

(रो पड़ती है)

कमलनयन—(पीठ सहलाते हुअे) अब क्या हो सकता है, नीलिमा ! जो चला गया वह अब और थोड़े ही आअेगा ?

नीलिमादेवी—लेकिन मुझ अभागिनका अेक मात्र सहारा चला क्यों गया ? क्या अुसे अपनी माँ पर भी दया न आअी ?

कमलनयन—(आश्वासन देते हुअे) पगली, अिस प्रकार दया करनेवाले कहीं कोअी बड़ा काम कर सकते हैं ?

नीलिमादेवी—(गुस्सेसे) आग लगे अिन बड़े कामोंको !

कमलनयन—(हँसनेका प्रयत्न करते हुअे) तुम्हें तो अैसा ही लगेगा, नीलिमा ! पर तुम्हें पता है, सारा गाँव अुसकी कितनी प्रशंसा कर रहा है ?

नीलिमादेवी—(दुखी आवाजसे) गाँव क्या, सारी दुनिया भी अुसके गुण गाअे तो अुससे मुझे क्या लाभ ? मेरी गोदका बच्चा तो चला गया न ? (अत्यन्त शोकपूर्वक) और मै अभागिन अन्तिम बार अुसका मुँह तक न देख सकी।

कमलनयन—(अुत्साहमें लानेको चेष्टा करते हुअे) तुम अभागिन कैसे ? तुम तो बड़ी भाग्यशालिनी हो, नीलिमा ! क्या तुम भूल गअी तुम्हारी ही गोदमें बारबार आनेकी विपिनकी महतीअिच्छा, तुम्हारी कोखसे फिर जन्म पानेकी अन्तिम प्रार्थना !

(सुनते ही नीलिमादेवीकी आँखें सजल हो जाती हैं।)

नीलिमादेवी—(दोनों हाथोंसे मुंह छिपाकर, आर्त स्वरसे) : विपिन !

कमलनयन--(धीरेसे अुसका मुँह अूपर अुठाकर) मौतके किनारे खड़ा होकर जिसका पुत्र अैसे वचन कह सकता है, वह माता भला अभागिन कैसे कही जा सकती है? और अिस मृत्युमे कहाँ कोअी कलंक था? वह तो अेक बहादुरको, जवाँ मर्दको शोभा देनेवाली मौत थी। (सहसा अुनकी आवाज भारी हो जाती है) अैसे पुत्रपर तो अुलटा हमे गर्व करना चाहिअे।

नीलिमादेवी—समझती हूं, सब कुछ समझती हूँ। पर मेरा मातृ-हृदय अैसे शुष्क नीरस अभिमानमे भला कैसे सन्तोष पा सकता है? तीन-तीन चार-चार सन्ताने हुअीं और सब बचपनमे ही चल बसी। अुनके कोमल चेहरे अब भी मेरे हृदयपटलपर अंकित है। अुनकी नाजुक अंगुलियोंके स्पर्शका रोमांच मै अब भी अनुभव करती हूँ। मगर वह सब दिलपर पत्थर रखकर सह लिया। यही सोचकर कि भले वे सब चले गअे, लेकिन मेरा विपिन तो बैठा है न? ओह, मेरे लिअे यह कितना बड़ा आश्वासन था! और वह था भी वैसा ही! सारा गाँव अुसकी बड़ाअी करते अघाता नही था... (रो पड़ती है।) कहिअे, कैसे सहन करूँ?

कमलनयन--गाँव तो अब भी कहाँ अघा रहा है, नीलिमा! और वह भी.........

नीलिमादेवी—(मानो कुछ न सुना हो) अुसे देख-देखकर मुझे यह परम सन्तोष मिलता था कि मानो मेरे सारे बालक अुसीमे पुनर्जीवन पाकर जी रहे है। जब मुझे वह 'माँ' कहकर पुकारता था, तब मानो हृदयमें सुधाका संचार हो जाता। वन्दना और अुसकी जोड़ी कैसी फबती थी। साक्षात अिन्द्र और शची ही देख लो। अुनके पहले पुत्रका नाम जयन्त रखना भी मैंने अपने मनमें सोच लिया था। मगर (सिर पीटते हुअे) मुझ अभागिनके नसीबमे यह सब कहाँ लिखा था?

(जोरसे रोती है।)

कमलनयन—(दुखी होकर) तुम शान्त नही रहती, नीलिमा! मुझे कितना दुख होता है अिसका तुम्हें खयाल है?

नीलिमादेवी—मै क्या करूँ? विपिनके चले जानेसे मेरे समस्त शरीरमें अैसी तीव्र वेदना हो रही है, मानो सारे बालकोंकी अेक साथ ही फिर मृत्यु

हो गअी हो। अितने बच्चे हुअे मगर फिर भी अन्तमें निस्सन्तान ही रहना है ?

(फिर रो पड़ती है)

कमलनयन—(प्रेमसे नीलिमादेवीको सोफेपर बैठा कर खुद भी अुसकी बगलमें बैठ जाते हैं।) अैसा क्यों बोलती हो, नीलि ! विपिनको ये लोग हमारे पाससे कैसे छीन ले जा सकते हैं ? हमारे अणु-अणुमें, हमारे रक्तके कण-कणमें वह हमेशा जिन्दा रहेगा और अुसकी स्मृति ! अुसे हमारे पाससे कौन छीन सकता है ? वह तो हमारी अमूल्य धरोहर है ! (हँसनेका प्रयत्न करते हुअे) पगली कहींकी !

नीलिमादेवी—अैसा झूठा आश्वासन मुझे क्यों दे रहे हो ? (फिर चित्त अस्वस्थ होता है) मुझे मेरा विपिन चाहिअे और कुछ नहीं। (खड़े होकर हाथ पसारकर) विपिन, अै विपिन तुम्हारी माँ तुम्हें बुला रही है। क्या तुम नहीं आओगे ?

कमलनयन—(खड़े होकर प्रेमसे नीलिमाको दुबारा बैठाते हुअे) अब मैं तुम्हें किस तरह समझाअूँ, नीलि ! विपिन कहीं नहीं गया। वह तो अमर हो गया है। तुम और मैं दोनों मर जाअेंगे, मगर वह तो अमर ही रहेगा। अुसे जो अक्षय कीर्ति प्राप्त हुअी है अुसे तो स्वयं काल भी नष्ट नहीं कर सकता। और (लालच दिखाते हुअे) अुस कीर्तिके थोड़े-बहुत भागीदार तुम और मैं भी हूँ, नीलिमा ! (नीलिमा अुनकी ओर देखती है) तुम्हें पता है सारा गाँव क्या कह रहा है ? 'धन्य है विपिन मुकर्जी', 'धन्य हैं अुसके माता-पिता' जहाँ-जहाँ मैं जाता हूँ, लोग मेरी ओर अँगुली दिखाते हुअे आपसमें जो कानफूसी करते हैं, वह भी मुझे सुनाअी दे जाती है। कहते हैं—'आप हैं कमलनयन मुकर्जी, विपिन मुकर्जीके पिता।' और तुम नीलि ! (अपनी ओर देखती हुअी नीलिमादेवीकी ठुड्डीको अूपर अुठाकर अुसकी आँखोंमें आँखें डालकर) अुसकी माता ठहरी ! तुम्हारा तो अिस कीर्तिमें भी बहुत बड़ा हिस्सा है।

नीलिमादेवी—मुझे अिस कीर्तिसे या और किससे क्या लेना-देना ? अैसी तुच्छ कीर्ति तो क्या, अगर अेक ओर समस्त संसारकी समृद्धि हो और

दूसरी ओर मेरा विपिन हो, तो मैं अुस समृद्धिको लात मारकर अपने विपिनको ही लूंगी और अपनेको धन्य समझूंगी। (गद्‌गद्‌ स्वरसे) अब मुझे अपने विपिनके मुँहसे अेक बार भी 'माँ' शब्द सुननेको नहीं मिलेगा न ? (कमलबाबूका हाथ पकड़कर) संसारकी समस्त माताओंसे आज मुझे औष्र्या हो रही है।

कमलनयन—और दुनियाकी माताअें अैसे वीर पुत्रको जन्म देनेके लिअे तुमसे औष्र्या कर रही होंगी।

नीलिमादेवी—मुझसे ! जिसका सर्वस्व लुट गया हो अुससे कौन औष्र्या करेगा ?

कमलनयन—(खड़े होकर) तुम्हारा कुछ भी नहीं लुटा, नीलिमा। तुम्हारा जो कुछ सर्वोत्तम था, जो सबसे अधिक स्पृहणीय था, वह सबकी माता भारतीके चरणोंमें समर्पित हुआ है। और अुसने भी अुसे चरणोंपर ही नहीं पड़ा रहने दिया होगा, बल्कि माँकी वत्सलतासे अुसे अपने कंठसे लगाया होगा, हृदयपर झेला होगा, अपनी अमृतमअी मुस्कानकी वर्षासे अुसका स्वागत किया होगा।

(दूरसे लोगोंके बड़े हजूमका शोरगुल सुनाअी देता है। कमलनयन थोड़ी देर शान्त रहनेके बाद)

तुम्हें भले न हो, नीलिमा ! मगर मुझे तो बड़ा गर्व हो रहा है। अुसका त्याग, अुसकी वीरता और अुसे प्राप्त हुअी कीर्ति मुझे अिन विषादकी घड़ियोंमें भी अेक प्रकारकी शान्ति दे रही है और मैं यह भी कबूल करता हूँ कि अैसा वीर पुरुष मेरे पुत्रके रूपमें आया और मुझे भी यशका भागीदार बना गया—यह भी मुझे अेक तरहकी परितृप्ति दे रहा है। मैं जहाँ भी जाता हूँ, लोग मेरे अिस भावकी पुष्टि करते हैं, प्रोत्साहन देते हैं। केवल जब घर आता हूँ तभी ......(जरा अस्वस्थ स्वरमें) नीलि, तुम्हें अैसा क्रन्दन करती हुअी देखता हूँ तब वह शान्ति और परितृप्तिकी भावना न जाने कहाँ अुड़ जाती है और मेरे हृदयमें अेक तरहकी गहरी वेदना होती है, कोअी असह्य विषाद छा जाता है।

(सिरपर हाथ रखते हैं)

(शोरगुल अब अधिक पास आता हुआ सुनाअी देता है। 'वन्दे मातरम्', 'अिन्किलाब जिन्दाबाद', 'करेंगे या मरेंगे' आदि नारे सुनाअी देते हैं।)

नीलिमादेवी—(खड़ी होकर अुनके निकट जाती है और स्नेहसे हाथ पकड़कर) क्या मैं यह नहीं समझती कि जो काम विपिनने किया, वह कोअी बिरला ही कर सकता है ? (रास्तेकी ओर संकेत करके) और अिन जुलूसोंमें 'करेंगे या मरेंगे', 'अिन्किलाब जिन्दाबाद', के नारे लगानेवाले लाखों आदमियोंमें विपिन जैसे मुसकराते-मुसकराते जानपर खेल जानेवाले कितने कम लोग होंगे यह भी क्या मैं नही समझती? क्या मेरी कोखसे जन्म लेनेवाले अिस रत्नका मुझे गौरव नही होगा ?

(थोड़ी देर शान्त रहती है, बाहरका हल्ला भी शान्त हो जाता है।)

सब समझती हूँ, सब जानती हूँ। अितने दिनोंसे रो-रोकर आपको कितना व्यथित करती हूँ यह भी समझती हूँ। मगर यह समझ भी मुझे शान्ति नहीं दे पाती। (दौड़कर सोफेपरसे विपिनकी तसवीर अुठाकर अुसकी ओर नजर स्थिर करके) सारे दिन जब अकेली पड़ जाती हूँ और मेरे अिस प्यारे बच्चेका मुखड़ा हजारों रूपों और हजारों रंगोंमें मेरी आँखोंके आगे तैरने लगता है, तब मुझसे नहीं रहा जाता। (जोरसे) मैं नहीं रह सकती। आप लाख कहें, पर मैं अपने विपिनके बिना हरगिज नहीं रह सकती। (तसवीरकी ओर देखते हुअे) बेटा, क्या तेरे लिअे मैं रो भी नहीं सकती ? क्या मेरी तकदीरमें अितना भी सुख नहीं है ? तेरा वियोग मैं कैसे सहन करूँ ? विपिन ! क्या तुम भी मुझे पगली कहोगे, बेटा ? कुछ तो बोलो।

(तसवीरको दृष्टि गड़ाकर देखती है। आँखोंसे आँसू बहते हैं। कमलनयन यह देखकर करुण भावसे सिर धुनते हैं। परदा गिरता है।)

सातवाँ दृश्य

स्थान—बाबू कमलनयनका दीवानखाना।

समय—१९३९–४० के करीब, सन्ध्याकी बेला।

(सारी व्यवस्था पहले दृश्य जैसी ही है। वातावरणमें दूर जाती हुअी बाजों और गीतोंकी आवाज सुनाअी देती है। परदा अुठता है तब कमलनयन बाबू आरामकुर्सीमें अस्वस्थ होकर बैठे हैं। अुनकी बगलवाली छोटी कुर्सीपर नीलिमादेवी पलथी मारकर बैठी हैं। वे अंगुलीसे पैरका नाखून बारबार पकड़ रही हैं। अुनकी दृष्टि बाबू कमलनयनकी ओर ही लगी है।

कमलनयन मुँहमें दबे चुरुटको अेक ओर रख देते हैं और जरा तनकर बैठ जाते है, मानों कोअी सामने झुककर अुनसे आशीर्वाद माँग रहा हो, अुनके दोनों हाथ अिस तरह अूपर अुठ जाते हैं, जैसे वे अुसे आशीर्वाद दे रहे हों।)

कमलनयन—(हाथ अूपर अुठाकर गद्गद् कंठसे) बहुत जिओ, बेटा!

(क्षण भर बाद भान आते ही चौंक जाते हैं। आसपास निगाह दौड़ाते हैं। फिर दुखसे आँखोंपर हाथ रखकर कुर्सीपर ढेर होकर पड़ जाते हैं।

अुसी क्षण नीलिमादेवी अुठकर घुटनोंके बल अुनके पास बैठ जाती हैं। अुनके चेहरेपर भी विषादकी गहरी छाया दिखाअी देती है। वे

अपने आँचलसे कमलनयन बाबूकी आँखें पोंछती हैं और छातीपर हाथ फेरती हैं।)

नीलिमादेवी—(मृदु स्वरसे) यह सब क्या कर रहे हैं! जरा अुठकर ठीक बैठिअे न?

कमलनयन—(नीलिमादेवीको अपनी ओर खींचते हुअे) नीलि! अेक बात पूछूं! सच कहोगी?

(नीलिमादेवी आँखोंसे ही सम्मति देती है।)

कमलनयन—सच कहना, दूल्हेको देखकर तुम्हें किसकी याद आअी थी?

(नीलिमादेवीकी ओर देखते हैं, जो अपनी पलकें झुका लेती है।)

(दुखसे) तब तुम बोली क्यों नहीं, नीलि?

नीलिमादेवी—आप तो सब जानते ही हैं। फिर क्या कहती?

कमलनयन—कहती क्यों नहीं? क्या मुझसे भी नहीं कह सकती? क्या हम अुसकी बात भी नहीं कर सकते?

नीलिमादेवी—बात क्यों नहीं कर सकते?

कमलनयन—तब फिर?

नीलिमादेवी—मगर.......

कमलनयन—'मगर'? मगरके क्या मानी?

नीलिमादेवी—मगर, आपको याद है। आज अितने बरसोंसे जब-जब मैं अुसका नाम लेती हूँ— सात-आठ बरस तो हो ही गअे होंगे— तब-तब आपकी अैसी रोनी सूरत हो जाती है कि अुसे देखकर मुझे ही अपना दिल कड़ा करना पड़ता है।

कमलनयन—हाँ, तुम बिलकुल ठीक कहती हो। मझे भी अिस बातका पता है कि मैं कैसा हो जाता हूँ। तुम्हें भी अपने भावोंको अन्दर-ही-अन्दर दिलमें दबानेमें कितनी मुश्किल होती होगी! कितनी वेदना होती होगी! फिर भी मैं अपनेपर काबू नहीं रख पाता। (अुनकी हालत फिर करुणाजनक हो जाती है।)

नीलिमादेवी—(अुलाहना-सा देते हुअे) फिर देखिअे.........! मेरी सौगन्ध है जो फिर अैसा किया तो।

कमलनयन—(दुखपूर्वक) मैं क्या करूँ ? (अचानक जैसे कोअी बात याद आ गअी हो, अुत्सुकतासे) मगर अैसा क्यों होता है, अिसका कारण जानती हो, नीलि ?

नीलिमादेवी—और क्या कारण हो सकता है ? दुख तो होगा ही।

कमलनयन—(सिर हिलाते हैं) नही, यह बात नहीं। मैं कहूँ ?

नीलिमादेवी—(आतुरतापूर्वक) कहिअे।

कमलनयन—तुम्हें याद है विपिनके......(रुकते हैं) विपिनके...... (फिर रुकते हैं) विपिनके जानेके करीब चार माह बाद तुम अपने भाअीके यहाँ स्यालदह गअी थीं न ?

नीलिमादेवी—हाँ, याद क्यों नहीं है। अिससे पहले मैं आपको रो-रोकर कैसा परेशान किया करती थी ? वहाँ जानेके बाद ही मुझे समझमें आया कि अुसपर तो हमें गर्व होना चाहिअे। अिस गर्वसे हमें मस्त रहना चाहिअे। यों रो-रोकर अुसकी स्मृतिको कमजोर नही करना चाहिअे।

कमलनयन—ओह ! अुस वक्तका तुम्हारा अविरल रोना और आँसुओंकी अजस्र धारा ! जब-जब अुसकी याद आती है, दिल काँप अुठता है।

नीलिमादेवी—मगर बादमें कभी अैसा हुआ है ? अुलटे आप ही. . .

कमलनयन—यही तो कहता हूँ न ? तुम्हारे मनको दिलासा देनेके लिअे मैंने तुम्हें वहाँ भेजा, लेकिन यहाँ मेरा बड़ा बुरा हाल हुआ। मैं बड़ा बेचैन रहने लगा। कही आता-जाता नहीं था। बस चुरुट पीता और आराम-कुर्सीमें पड़ा रहता।

नीलिमादेवी—यह बड़ी अजीब बात थी कि आपके मित्र आपको अिस प्रकार अकेले छोड़ देते थे।

कमलनयन—नहीं, वे मुझे अकेले छोड़नेवाले नहीं थे। कुछ ही दिन बाद वे चार-पाँच मिलकर अेक साथ घरपर आ धमके और अुन्होंने शिकायत की कि

मे कही बाहर क्यों नहीं आता-जाता और किसीसे मिलता-जुलता क्यों नहीं। और जब अुन्हे यह पता लगा कि तुम्हारे आजकल यहाँ नहीं होनेके बावजूद मै घर ही मे पड़ा रहता हूं तब तो बेचारे सचमुच ही बड़ी चिन्ता करने लगे। मैंने अुनसे कहा कि मुझे कुछ नही हुआ। केवल मन भयभीत रहता है अिसलिअे बेचैनी बनी रहती है।

नीलिमादेवी—(आश्चर्यसे) भय ? आपको किस बातका भय लगता था?

कमलनयन—(स्नेहसे अुसकी ओर देखकर) अिस बातका कि तुम कही पागल न हो जाओ।

नीलिमादेवी—(हंसकर) क्या मै पागल होने-जैसी हूँ ?

कमलनयन—हरगिज नहीं। लेकिन तब मुझे अितनी बेचैनी क्यों रहती थी ? यह विचार अेक क्षणके लिअे भी शान्ति नही लेने देता था। दोस्त लोग भी मेरी यह बात सुनकर मुझे आश्वासन देते-देते तुम्हारी वेदनाकी बात करने लगे और फिर विपिनकी बहादुरीपर। विपिनकी बातें करते-करते अुसे अनुमति देनेमे मैने जो बहादुरी दिखाअी थी अुसकी बात निकली।

(नीलिमादेवी चौंककर देखती हैं।)

कमलनयनः—यह बात मैने तुमसे कभी नही कही, नीलि। वैसे बहुत-सी बाते नही कही है। (गुनहगारकी भाँति) मगर आज मै तुमसे यह रहस्य कहता हूँ कि मैंने विपिनको अिस कामके लिअे अनुमति दी थी।

नीलिमादेवी—सचमुच ! (फिर तुरन्त स्वस्थ होकर) खैर, दी होगी ! मगर अुससे क्या ? आप जैसे देश-प्रेमीसे और क्या आशा की जा सकती है ?

कमलनयन—(कटु स्वरमे) हाँ, तुम ठीक कहती हो। (फिर सादी आवाजमे) अपनी प्रशंसाकी बाते सुन-सुनकर मै खुशीसे फूलकर आकाशमें अुड़ने लगा। विपिनमें देशभक्तिके संस्कार डालनेके लिअे किअे गअे श्रमकी, रसिक-रसिकाओंकी नही, पर वीर पुरुषोंके चरित्रोंका अध्ययन करानेके प्रयत्नकी तथा मेरे प्रति अुसके आदर और विश्वासकी अनेक बाते मैने अपने मित्रोंसे कही। अुनकी आँखोंमे प्रशंसाके भाव अुमड़ आअे। मैं रंगमें आ गया।

जो बात मै अबतक अपने आपमे कहते हुअे डरता था, वह भी मैंने बातोंकी धुनमें अुन्हें कह डाली।

नीलिमादेवी--मित्रोंके सामने दिल खोलना, स्वाभाविक है। मगर अैसी क्या बात थी जो खुदसे भी कहते हुअे अितना डरते थे।

कमलनयन--विपिन जब मुझसे अनुमति लेने आया था, तब वह अपने निर्णयमें ढीला हो रहा था। मन ढीला और कमजोर पड़ रहा था। वह अपने निर्णयको पक्का न करनेके लिअे बहाना ढूँढ़ रहा था। अन्तिम मुलाकातके समय विपिनने खुद मुझे यह बात कही थी। मित्रोंके आगे मैंने अिसे गर्वसे कहा। (अूँचे स्वरसे) मैंने अपने लड़केको--अिकलौते बेटेको--तेजस्वी पुत्रको जान निछावर करनेका आदेश दिया। (कटुतासे) क्या यह कोअी अैसी-वैसी बहादुरी थी? (दो क्षण रुककर) दोस्त तो सुनकर स्तब्ध हो गअे। कालीपदने तो कहा भी 'आप महापुरुष हैं, कमलनयन! महान हैं!'

प्रशंसाके अिस वातावरणमें मेरे मनका विषाद नष्ट हो गया। दोस्तोंमे खूब खुलकर बाते की और मौज की। दूसरे दिनमे क्लबमे आनेका भी मैंने अुन्हें वचन दिया।

नीलिमादेवी--मगर अिन सब बातोंका अभी क्या प्रयोजन है? शादीमें जानेमें देर नहीं होगी?

(खड़ी होती है)

कमलनयन--(हाथ पकड़कर बैठाते हुअे) बस, अब बात समाप्त ही हो रही है, नीलिमा! आज मै तुमसे सब कुछ कह देना चाहता हूँ। अब तक मैंने तुम्हें कुछ नहीं कहा था। और (दुखपूर्वक) न कहनेका भी मनपर कितना भयंकर बोझ होता है! अिस बोझने ही मेरी सुदृढ़ कायाको निर्बल बनाकर मुझे अपनी अुम्रकी अपेक्षा कही अधिक बूढ़ा बना दिया। (करुण स्वरसे) क्या तुम यह नही देख रही हो?

नीलिमादेवी--आज आप अैसा क्यों कह रहे है? मुझे यह सब अच्छा नही लगता।

कमलनयन—अच्छा लगे या न लगे; लेकिन जरा मेरी बात सुन लो। फिर तो...दूसरे दिन शामको मैं क्लब गया। बहुत दिन बाद मैंने अैसी अुमंग और अुत्साहका अनुभव किया। तुम दूर थी; अिसलिअे तुम्हारा दुख तो मुझे अपनी आँखों देखना था नहीं। दोस्तोंने प्रशंसाकी जो मदिरा पिला दी थी, अुसका नशा अभी अुतरा नहीं था। मेरी बहादुरीकी बात अिन लोगोंने क्लबमें अवश्य की होगी; अिसलिअे मेरे जाते ही सब लोग मेरी ओर किस प्रकार प्रशंसा-भरी दृष्टिसे देखेंगे अिसका विचार करके मन-ही-मन मैं खुशीसे झूम रहा था। पर जब मैं क्लबमें दाखिल हुआ, तो किसीने मेरी ओर आँख अुठाकर देखा तक नहीं। विभूति, कालीपद आदिके आसपास लोगोंका अेक बड़ा-सा हुजूम जमा था। वे लोग मेरी ही चर्चा कर रहे थे। कालीपद मेरी प्रशंसाके जो पुल बाँध रहा था, अुसे मैंने सुना और वे लोग मुझे देख न सकें—अिस प्रकार मैं चुपकेसे अेक ओर खिसक गया। विभूतिने कहा—'मर्द आदमी है।' तभी चारुचन्द्र बोला—'मर्द? कैसा मर्द?.....'

नीलिमादेवी—(बीचमें) मुआ चारुचन्द्र, वह तो आपका सदाका जानी दुश्मन है।

कमलनयन—वह चाहे जो हो, मगर अुसने कहा कि—"मूर्ख है, अपने लड़केको चढ़ा मारा। दूसरे लोगोंने जब अुसका विरोध किया तो अुसने कहा—'मर्द ही था तो वह खुद क्यों नहीं गया? अपने बदलेमें बेचारे लड़केको नाहक चढ़ा मारा? और अब स्वयं अुसका यश लेना चाहता है?'

नीलिमादेवी—वह खुद कितना बहादुर है, क्या लोग यह नहीं जानते। आप कुछ नहीं बोले?

कमलनयन—मैं तो वहाँसे सबकी आँखें बचाकर दबे पाँव बाहर निकल आया। अुसके अिन वाक्योंने, नीलि, मेरे हृदयको सचमुच बींध दिया। मुझे अपने गरूरके नशेमें, यश पानेकी लालसामें जो बात आज तक नहीं सूझी थी, वह अिन शब्दोंके सुनते ही तुरन्त समझमें आ गअी कि......

(आगे नहीं बोल पाते। नीलिमादेवी अुनकी ओर देखती हैं। कमलनयन खड़े होकर दो क्षण बाद दृढ़ आवाजसे)

कि, नीलि, तुम्हारे लालका मैंने ही अपने हाथों खून किया है।

(फिर कुर्सीपर धम्मसे गिर जाते है।)

नीलिमादेवी—(रोती हुअी आवाजसे) आप अैसा क्यों कह रहे हैं?

(अुनके गलेमें हाथ डालती है, हिचकी आती है।)

कमलनयन—सच कहता हूँ। मुझे मान चाहिअे था, प्रतिष्ठा चाहिअे थी। मै नामर्द था। कायर था। रत्न-जैसे लड़केको गँवाया, अपनी जिन्दगी बरबाद कर ली और तुम्हारा जीवन भी चौपट कर दिया।

नीलिमादेवी—(स्नेहसे) मेरी सौगन्ध है अगर आप अैसा कुछ बोले तो। अिसमें कोअी क्या कर सकता है?

कमलनयन—क्यों नहीं कर सकता? मुझे अपने अहमको पोसनेमें बिलकुल भान ही न रहा, और यह अहम भी कैसा? जेलमें अन्तिम मुलाकातके वक्त जब विपिनने मुझसे कहा कि वह ढीला-कमजोर हो गया था, अुसका मन डगमगा रहा था, अुसका कमजोर दिल कोअी बहाना ढूँढ़ रहा था, तब कहीं पहली बार मुझे थोड़ा बहुत ख्याल आया। मैंने अुसे कहा भी कि 'तब तो मैंने ही तुम्हें.....' मगर अुसने तो मेरा अेहसान ही माना। अुसकी आँखोंमें अुस समय कितनी सचाअी, कितनी भावना और कितनी भक्ति थी! मेरे दुखकी सीमा न रही। लेकिन बादमें तो अिस बातका भी मुझे अभिमान होने लगा। मैंने ही अपने कमजोर लड़केको हिम्मत दी, सच्चा मार्गदर्शन कराया। अभागेके लिअे क्या यह कोअी कम गर्वका विषय था!

(सिर पीटता है।)

अिस अभिमानकी अभिव्यक्ति मैंने अपने मित्रोंके सम्मुख की और यह ज्ञान मिला कि 'मर्द था तो मै खुद क्यों नही गया।'

बात सच है, नीलि! अगर मैं मर्द था तो खुद क्यों नहीं गया? त्याग कर सकता था, तो अपने जीवनका त्याग क्यों नहीं किया? मेरी भी अेक बार अैसी ही मुराद थी। मगर मैं न तो जवानीमें गया

और न अिस वक्त.....वह प्रतिभा........और विपिन (आवेशसे) नीलिमा, तुम प्रतिभाकी बात जानती हो? अुसने भी......

(सिर झुका लेते हैं)

नीलिमादेवी—(स्नेहसे अुनके सिरको अुपर अुठाते हुअे) आप अैसा झूठमूठ दुख क्यों मान रहे हैं? विपिनको आप मना भी करते तो क्या वह रुकनेवाला था?

कमलनयन—कौन कह सकता है, नीलि! वह अपने निश्चयमें ढीला था। मैं अिनकार करता तो शायद रुक भी जाता। (फिर आवेशमें) लेकिन मुझे अुसका बलिदान देकर सम्मान प्राप्त करना था। अुसकी कुरबानीसे यश प्राप्त करना था। नही तो क्या मै अुसे यह नही कह सकता था कि 'बेटा, तुम अभी जवान हो, अधकचरे हो, जरा और अनुभव लो, मनको मजबूत बनाओ। भारत तो तुम्हारी और मेरी दोनोंकी माता है। पहले मुझे अपने रक्तसे अुसका खप्पर भरने दो!' (हृदय भर आता है) किन्तु मुझे वीर थोड़ा ही बनना था, वीर पुत्रका पिता कहलाना था! अपनी अेक मात्र आशालताको चितामें जलाकर अुसपर अभिमान करना था!

(सिसकारी निकलती है)

नीलिमादेवी—(सजल नयनोंसे) आप भी क्या बच्चों-जैसी बातें करते है?

जो लोग मृत्युका अुत्सव मनाते हैं वे क्या कभी किसीके रोके रुकते हैं? और आप क्या विपिनको नही जानते थे? वह क्या किसीकी सुननेवाला था?

कमलनयन—मुझे भी यही लगता है कि शायद वह न मानता। हरगिज नही रुकता। मै क्या, बल्कि सारी दुनिया अुसके सामने खड़ी हो जाती, तब भी वह कदापि नही रुकता। वह वीर था, मर्द था, योद्धा था। (फिर विचारमें पड़कर) मगर कदाचित वह रुक भी जाता।

कौन जाने? वन्दना, जीवन, जवानी, सब अुसे खींच लेते। काश, मेरी कीर्तिवासना, मेरा अभिमान आड़े न आता! यह खयाल मुझे अेक पलके लिअे भी चैन नही लेने देता है, नीलि! यदि मैंने अपने अभिमानको पुष्ट न किया होता, अुस अभिमानकी कामना न की होती, और अिस थोथे भावप्रदर्शन द्वारा कि मैंने कोअी बड़ी बहादुरी की है, झूठा यश न लूटा होता और अन्य लोगों-जैसा ही विपिनका भी हुआ होता तो मुझे दुख न होता, नीलि! लेकिन यह तो.....

नीलिमादेवी—(आँखोंमें आँसू होते हुअे भी हँसनेका प्रयत्न करते हुअे, स्नेहसिक्त स्वरसे) कैसी बच्चों-जैसी बात करते हैं आप भी? चलिअे, अब अुठिअे। वर-यात्रा तो न जाने कहाँ पहुँच गअी होगी।

कमलनयन—यह चुरुट पीते-पीते अुसके आसमानमें मँडराते गोलाकार धुंअेके गुब्बारोंमें अपने अतीत जीवनकी तमाम तसवीरें मेरी आँखोंके आगे चलचित्रकी भाँति खड़ी हो गअीं। सारे पुराने जखम फिर ताजे हो गअे, नीलि! बड़ा अेकाकीपन लग रहा है! मुझे बारातमें नहीं जाना।

नीलिमादेवी—यह कैसे हो सकता है? बहुत बुरा दिखेगा! और क्या मुझे ये सब वेदनाअें नही होतीं?

कमलनयन—(शोकपूर्वक) तुम्हारी आँखोंके तारे, राजदुलारेको फाँसीपर चढ़ाकर मैंने तुम्हें सन्तानहीन बना दिया।

नीलिमादेवी—फिर वही बात? आप भी अजीब आदमी हैं! अिसमें आपका क्या दोष? नाहक दिल छोटा करते हैं। (सजल नयन होते हुअे भी स्नेहसे मुस्कराकर) और अिस अुम्रमें भी तो आप मेरे लिअे बालक जैसे ही हैं! (अुन्हें अुठाते हुअे।)

अच्छा अब चलिअे।

(नीलिमादेवी अपनी आँखें पोंछती हैं। कमलनयन बाबू खड़े होते हैं। जैसे वे पाँच वर्ष और ज्यादा बूढ़े हो गअे हों, नीलिमादेवीके कन्धेका सहारा ढूँढ़ते हैं।

अुसी स्थितिमें बरामदेकी ओर खुलनेवाले दरवाजेसे वे दोनों कटघरेमें होकर चले जाते हैं। बत्ती अुन दोनोंपर प्रकाश फेंकती ह। अुनके बाहर चले जानेके बाद स्टेजपर अँधेरा छा जाता है।)

(परदा गिरता है।)

हमारे विशेष प्रकाशन

धरतीकी ओर [अुपन्यास]
सुप्रसिद्ध कन्नड़ अुपन्यासका हिन्दी अनुवाद
मूल लेखक—**श्री शिवराम कारान्त**
मूल्य—५)

सोरठ तेरा बहता पानी [अुपन्यास]
गुजरातीके सुप्रसिद्ध अुपन्यासका हिन्दी अनुवाद
मूल लेखक—**स्व. झवेरचन्द मेघाणी**
मूल्य—३)

लोकमान्य तिलक [जीवन-चरित्र]
लेखक—**प्राध्यापक भी. गो. देशपांडे**
मूल्य—३)

प्राप्तिस्थान : **राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा**
राजकमल प्रकाशन लि. प्रयाग, दिल्ली

समितिके कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

भारतीय वाङ्मय [भाग १, २, ३]

प्रथम भागमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश तथा द्वितीय भागमें हिन्दी, उर्दू और तृतीय भागमें बँगला, अुड़िया, असमिया भाषाओंके संक्षिप्त अितिहास संग्रहीत हैं।

मूल्य—भाग : १ तथा ३ प्रत्येक—२) भाग दूसरा—१॥)

मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण

लेखक : प्रो. न. चि. जोगलेकर, अेम. अे.

मराठी भाषाकी अुत्पत्ति, विकास तथा मराठी साहित्यके संक्षिप्त अितिहासके साथ-साथ, अुसके व्याकरणको अिस पुस्तकमें रोचक शैलीमें समझाया गया है।

मूल्य—२।)

फ्रेंच स्वयं-शिक्षक

लेखक : डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

अिस पुस्तककी सहायतासे भाषा-जिज्ञासुओंको सहज ही में फ्रेंच भाषाका ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

मूल्य—५)

प्राप्तिस्थान

पुस्तक-बिक्री-विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।